उर्दू के प्रसिद्ध शायर
जोश
संपादक: प्रकाश पंडित
हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटि
जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२

क्रम

•

परिचय

कुछ बरस पहले जब उर्दू के एक प्रकाशन-संस्थान की ओर से शायरों और अदीबों से एक-दूसरे के परिचय लिखवाकर उनकी श्रेष्ठ रचनाओं के साथ प्रकाशित किए जा रहे थे, तो उर्दू के प्रसिद्ध कहानीकार स्वर्गीय सआदत हसन मण्टो से कहा गया कि वह अपने समकालीन शायर, अदीब और सिद्धहस्त सम्पादक अहमद नदीम क़ासमी का परिचय लिख दें, जिसके लिए उन्हें माक़ूल मुआवज़ा दिया जाएगा।

मण्टो की माली हालत उन दिनों बड़ी खस्ता थी, फिर भी उन्होंने यह कहकर यह पेशकश ठुकरा दी कि वह क़ासमी साहब के बारे में कुछ नहीं लिख सकते।

"क्यों ?"

"क्योंकि वह ज़रूरत से ज्यादा शरीफ़ इन्सान हैं।"

○

आज यही समस्या मेरे सामने है। मुझे हज़रत 'ज़ौक़' का परिचय लिखना है और मैं सोच रहा हूं कि इस ज़रूरत से ज्यादा

शरीफ़ इन्सान और उससे भी ज़्यादा शरीफ़ शायर के बारे में क्या लिखूं ?

अपने समकालीन शायर मिर्ज़ा 'ग़ालिब' की तरह न तो वह—

क़र्ज़ की पीते थे मै[1] और समझते थे कि हां
रंग लाएगी हमारी फ़ाक़ामस्ती एक दिन

—और न अपने काबुली दरवाज़ा, दिल्ली वाले दड़बानुमा एक छोटे-से मकान के तंग आंगन में—जहां वह प्राय: एक खुर्री चारपाई पर बैठे या लेटे हुक़्क़े के कश लगा-लगाकर काव्य-अभ्यास करते रहते थे—उन्होंने 'ग़ालिब' की तरह जुआ खिलवाया और न ही इस अपराध में जेल की हवा खाई। यहां तक कि उन्होंने किसी सितम-पेशा डोमनी तो डोमनी, किसी सीधी-सादी घरेलू औरत से भी इश्क़ न किया; बल्कि इश्क़ करने के दिन पांच वक़्त की नमाज़ अदा करने में बिताते रहे और नमाज़ के बाद पहले अपनी सेहत और तन्दुरुस्ती, फिर बादशाह बहादुर शाह 'ज़फ़र' की सेहत और तन्दुरुस्ती और उसके बाद अपने मोहल्ले के जुम्मा नामक भंगी के बीमार बैल की सेहत और तन्दुरुस्ती के लिए खुदा से दुआएं मांगते रहे; और छत्तीस वर्ष की आयु में तो अपने सब नाकर्दा[2] गुनाहों से तौबा कर ली।

ऐसे शरीफ़ इन्सान और शायर के बारे में क्या लिखा जाए, जिसने पुराने ढर्रे के अपने उस्ताद शाह नसीर के हतोत्साहों पर कभी माथे पर बल डाला न अपने सैकड़ों शागिर्दों की वाह-वाही से माथे के बल खोले—जिनमें नवाब इलाही बख़्श खां 'मारूफ़' जैसे बुज़ुर्ग भी थे और स्वयं 'ज़ौक़' से कई हाथ आगे निकल जाने वाले मिर्ज़ा 'दाग़' देहल्वी भी (जो बाद में उर्दू शायरी के एक बाक़ायदा स्कूल

---

१. मदिरा २. न किए हुए

के सूत्रधार बने), और जो दिल ही दिल में यह कहकर कुढ़ने के बावजूद कि—

'ज़ौक़' मुरत्तब[1] क्योंकि[2] हो दीवां[3] शिकवा-ए-फ़ुर्सत[4] किससे करें
बांधे गले में हमने अपने आप 'ज़फ़र' के झगड़े हैं

—आयु-भर 'ज़फ़र' के लिए ग़ज़लें और उनकी शान में क़सीदे (प्रशंसा-काव्य) तो लिखते ही रहे; बादशाह को अगर कभी किसी फ़क़ीर की सदा पसन्द आ गई या किसी फल बेचने वाले ने कोई पसन्दीदा हांक लगा दी तो हुक्म हो जाता कि तुरन्त इस बहर में शे'र कहो और 'ज़ौक़' फ़िलबदी (तत्काल) शे'र कहने लगते। यही नहीं, उन्हें दरबारी गायकों के लिए ठुमरियां, दादरे, टप्पे, ध्रुपद, भैरवी आदि राग-रागिनियों के लिए भी फ़िलबदी शे'र कहने पड़ते थे।

उन्नीस वर्ष की अल्पायु में ही बादशाह अकबर शाह द्वितीय के 'ख़ाक़ानी[5]-ए-हिन्द' के ख़िताब ने और फिर बहादुर शाह 'ज़फ़र' के 'मलिकुश्शो'रा'[6] के ख़िताब ने फ़ख्र से उनकी गर्दन अकड़ाई और न इन बादशाहों से लगभग आधी सदी तक मिलने वाले वेतन—चार रुपये, पांच रुपये, सात रुपये और फिर तीस रुपये ने शर्म और नदामत से झुकाई।

बादशाह बहादुर शाह 'ज़फ़र' की उस्तादी या नौकरी के कारण जिन्होंने अपने अधिकांश अच्छे शे'र 'ज़फ़र' के दीवान की शोभा बना दिए और आने वाली पीढ़ियों को इब्रत दिलाने के लिए—

---

१. सम्पादित २. क्योंकर, कैसे ३. दीवान, काव्य-संग्रह ४. फ़ुर्सत की शिकायत ५. ख़ाक़ानी—फ़ारसी भाषा का क़सीदे कहने वाला प्रसिद्ध शायर ६. शायरों का बादशाह

नाम मन्ज़ूर है तो फ़ैज़ के असबाब[1] बना
पुल बना, चाह[2] बना, मस्जिद-ओ-तालाब बना

या

ऐ 'ज़ौक़' देख दुख़्तरे-रज़ को[3] न मुंह लगा
छूटती नहीं ये काफ़िर मुंह से लगी हुई

और

हक़ ने[4] मुझ को इक ज़बां दी और दिए हैं कान दो
इस के ये मानी,[5] कहे इक और सुने इन्सान दो

—ऐसे शे'रों की विरासत अपने नाम से छोड़ दी, जिन्हें उनकी मृत्यु के बाद उनके एक अत्यन्त श्रद्धालु शिष्य मौलाना मोहम्मद हुसैन 'आज़ाद' ने काफ़ी मेहनत बल्कि मशक़्क़त से खोज-खाजकर उनकी प्रशंसा में धरती-आकाश के ऐसे डांडे मिलाकर प्रस्तुत किया, जिनपर बेचारे 'ज़ौक़' की शायरी किसी भी तरह पूरी नहीं उतरती।

इस तरह एक ज़ुल्म उनके उस्ताद शाह नसीर ने उनपर किया, तो दो ज़ुल्म उनके दो शागिर्दों—'ज़फ़र' और 'आज़ाद' ने कर डाले।

इसलिए ऐसे मज़लूम शख़्स और शायर के परिचय के सिलसिले में सिवाय इसके और क्या कहा जा सकता है कि जनाब शेख़ मोहम्मद इब्राहीम 'ज़ौक़' बड़ी शराफ़त के साथ १७८९ ई० में देहली के शेख़ मोहम्मद रमज़ान नामक एक निर्धन सिपाही के यहां पैदा हुए और १८५७ ई० के हंगामों से पूर्व ही १८५४ ई० में उससे

१. जनहित की चीज़ें २. कुएं ३. अंगूर की बेटी, अर्थात् शराब को ४. ख़ुदा ने ५. अर्थ

भी अधिक शराफ़त के साथ अल्लाह को प्यारे होने से तीन घण्टे पहले यह शे'र फ़र्मा गए—

कहते हैं 'ज़ौक़' आज जहां से गुज़र गया
क्या ख़ूब आदमी था ख़ुदा मग़्फ़िरत करे[1]

इस ख़ूब आदमी के परिचय में इस प्रकार के परम्परागत उल्लेख की मैं ज़रूरत नहीं समझता कि वह अपने माता-पिता की इकलौती सन्तान थे या उनके इतने बहन-भाई थे। और इस उल्लेख की भी कोई ज़रूरत नहीं कि स्वयं उन्होंने उस ज़माने में भी बड़ी सख़्ती से परिवार-नियोजन पर अमल करते हुए दो या तीन की बजाय केवल एक ही बच्चा पैदा किया, जिसका नाम मोहम्मद इस्माइल था, और वह भी १८५७ के स्वतन्त्रता-संग्राम में मारा गया। इस उल्लेख की भी क्या ज़रूरत है कि वह दाढ़ी रखते थे या तरशवाते थे। सिर पर टोपी पहनते थे, नंगे सिर रहते थे या पगड़ी बांधते थे। या फिर उनकी स्मरण-शक्ति इतनी तेज़ थी कि एक बार पढ़ी हुई कोई भी पोथी उन्हें तुरन्त कण्ठस्थ हो जाती थी। अलबत्ता उस काल की उर्दू शायरी के स्वभाव के बारे में दो शब्द कहना बहुत ज़रूरी है, अन्यथा उनके इस संक्षिप्त परिचय और उनकी शायरी के इस चयन का प्रकाशन अर्थहीन हो जाएगा।

'ज़ौक़' के ज़माने में उर्दू शायरी का चरमोत्कर्ष था—शब्दों की जादूगरी। कठिन से कठिन ज़मीनों में शे'र कहना। तुरत-फुरत मिस्रा लगाना, विचार या अनुभूति को शे'र के सांचे में ढालने की बजाय कल्पना की उच्चतम उड़ानें भरना। केवल रदीफ़-क़ाफ़ियों के सहारे नये-नये विषय प्रस्तुत करना—वह भी अधिक से अधिक अतिशयोक्तिपूर्ण। इस दृष्टि से ज़ौक़ ने अपनी शायरी में न सिर्फ़ ये

1. बख्शिश या मोक्ष प्रदान करे

सब कमाल कर दिखाए, बल्कि 'ग़ालिब' और 'मोमिन' ऐसे महान शायरों की मौजूदगी में देहली की टकसाली ज़बान और मुहावरे के लिए सनद बन गए और इसीलिए उनकी शायरी उर्दू की क्लासीकल शायरी का एक अविस्मरणीय अंग है।

प्रकाश पंडित

संकलन

दो बहुचर्चित ग़ज़लें

लाई हयात[1] आए, क़ज़ा[2] ले चली चले
अपनी ख़ुशी न आए न अपनी ख़ुशी चले

बेहतर तो है यही कि न दुनिया से दिल लगे
पर क्या करें जो काम न बेदिल-लगी चले

कम होंगे इस बिसात पे[3] हम जैसे बद-क़िमार[4]
जो चाल हम चले निहायत बुरी चले

हो उम्रे-ख़िज़्र[5] भी तो कहेंगे ब-वक़्ते-मर्ग[6]
हम क्या रहे यहां, अभी आए अभी चले

दुनिया ने किसका राहे-फ़ना में[7] दिया है साथ
तुम भी चले चलो युंही जब तक चली चले

नाज़ां[8] न हो ख़िरद पे[9] जो होना है वो ही हो
दानिश[10] तिरी न कुछ मिरी दानिशवरी चले

---

१. जीवन २. मृत्यु ३. संसार-रूपी शतरंज का तख़्ता ४. कच्चे जुआरी ५. ख़िज़्र जैसी दीर्घायु (ख़िज़्र अमर माने जाते हैं) ६. मृत्यु के समय ७. मृत्यु-मार्ग में ८. गर्वित ९. बुद्धि पर १०. ज्ञान

अब तो घबरा के ये कहते हैं कि मर जाएंगे
मर के भी चैन न पाया तो किधर जाएंगे

तुम ने ठहराई अगर ग़ैर के घर जाने की
तो इरादे यहां कुछ और ठहर जाएंगे

सामने चश्मे-गुहर-बार के[१], कह दो, दरिया
चढ़ के गर आए तो नज़रों से उतर जाएंगे

हम नहीं वो जो करें ख़ून का दावा तुझ पर
बल्कि पूछेगा ख़ुदा भी तो मुकर जाएंगे

आग दोज़ख़ की भी हो जाएगी पानी-पानी
जब ये आसी[२] अर्क़े-शर्म से[३] तर जाएंगे

पहुंचेंगे रहगुज़रे-यार तलक[४] हम क्योंकर
पहले जब तक न दो-आलम से[५] गुज़र जाएंगे

नहीं पाएगा निशां कोई हमारा हरगिज़
हम जहां से रविशे-तीरे-नज़र[६] जाएंगे

'ज़ौक़' जो मदरिसे के[७] बिगड़े हुए हैं मुल्ला
उनको मैख़ाने में ले आओ संवर जाएंगे

१. मोती बरसाने वाली आंखों के २. पापी ३. लज्जा के पसीने से ४. प्रेयसी के गुज़रने के मार्ग तक ५. लोक-परलोक से ६. नज़र के तीर की तरह ७. पाठशाला के

जीना नज़र अपना हमें उसला[1] नहीं आता
गर आज भी वो रश्के - मसीहा[2] नहीं आता

मज़कूर[3] तिरी बज़्म में किस का नहीं आता
पर ज़िक्र हमारा नहीं आता, नहीं आता

आता है दम आंखों में दमे - हसरते - दीदार[4]
पर लब पे कभी हर्फ़े - तमन्ना[5] नहीं आता

बेजा है दिला ! उसके न आने की शिकायत
क्या कीजिएगा फर्माइए, अच्छा नहीं आता

हम रोने पे आ जाएं तो दरिया ही बहा दें
शबनम की तरह से हमें रोना नहीं आता

क़िस्मत ही से लाचार हूं ऐ 'ज़ौक़' वगर्ना
सब फ़न में हूं[6] मैं ताक़[7] मुझे क्या नहीं आता

---

१. कदापि २. हज़रत मसीह (जो बीमारों को अच्छा और मुर्दों को जीवित कर देते थे) का ईर्ष्या-पात्र (प्रेयसी) ३. ज़िक्र ४. दर्शनाभिलाषा के समय ५. आकांक्षा-रूपी शब्द ६. कलाओं में ७. दक्ष

हम हैं और साया तिरे कूचे की दीवारों का
काम जन्नत में है क्या हम से गुनहगारों का

मोहतसिब[1] दुश्मने-जां गरचे है मयख्वारों का[2]
दीजे इक जाम तो है यार अभी यारों का

हाए वो आशिक़े-जांबाज़ कि इक मुद्दत तक
हदफ़े-तीर[3] रहा तुझ से कमांदारों का[4]

चर्ख़ पर[5] बैठ रहा जान बचा कर ईसा
हो सका जब न मुदावा[6] तेरे बीमारों का

बे-सियाही न चला काम क़लम का ऐ 'ज़ौक़'
रु - सियाही[7], सरो-सामां है सियहकारों का[8]

---

१. रसाध्यक्ष अर्थात् शराब पीने वालों को दण्ड देने वाला
२. शराबियों का ३. तीर का निशाना या लक्ष्य ४. धनुर्धारियों का
५. आकाश पर ६. इलाज ७. मुंह काला या बदनामी ८. पापियों का

देख छोटों को है अल्लाह बड़ाई देता
आस्मां, आंख के तिल में है दिखाई देता

लाख देता फ़लक[1] आज़ार[2] गवारा थे मगर
एक तेरा न मुझे दर्दे-जुदाई देता

मुंह से बस करते न हरगिज़ ये ख़ुदा के बंदे
गर हरीसों को[3] ख़ुदा सारी ख़ुदाई देता

मैं हूं वो सैद[4] कि दाम में[5] फंसता आकर
गर कफ़स से मुझे[6] सैयाद[7] रिहाई देता

देख गर देखना है 'ज़ौक़' कि वो पर्दा-नशीं[8]
दीदा-ए-रोज़ने-दिल से[9] है दिखाई देता

---

१. आकाश, ईश्वर २. दुःख ३. लोभियों को ४. शिकार ५. जाल में ६. पिंजरे से ७. शिकारी ८. पर्दे में रहने वाला ९. दिल के छिद्र-रूपी आंख से

लिखिए उसे ख़त में कि सितम उठ नहीं सकता
पर ज़ो'फ़ से[1] हाथों में क़लम उठ नहीं सकता

आती है सदा-ए-जरसे-नाक़ा-ए-लैला[2]
पर हैफ़[3] कि मजनूं का क़दम उठ नहीं सकता

इतना हूं तिरी तेग़ का[4] शर्मिन्दा-ए-एहसां[5]
सर मेरा तिरे सर की क़सम उठ नहीं सकता

पर्दा दरे-का'बा से[6] उठाना तो है आसां
पर पर्दा-ए-रुख़सारे-सनम[7] उठ नहीं सकता

क्यों इतना गिरां-बार[8] है जो रख़्ते-सफ़र में[9]
ऐ राहरवे-मुल्के-अदम[10] उठ नहीं सकता

दुनिया का ज़रो-माल किया जमअ़ तो क्या 'ज़ौक़'
कुछ फ़ायदा बे-दस्ते-करम[11] उठ नहीं सकता

---

१. कमज़ोरी के कारण २. लैला के ऊंट (के गले) की घंटी की आवाज़ ३. अफ़सोस ४. तलवार का ५. कृतज्ञ ६. का'बे के दरवाज़े से ७. प्रेयसी (या मूर्ति) के चेहरे पर पड़ा हुआ पर्दा ८. बोझिल ९. यात्रा के सामान में १०. परलोक के यात्री ११. ईश्वर की कृपा के बिना

किसी बेकस को[1] ऐ बेदादगर[2], मारा तो क्या मारा
जो आप ही मर रहा हो, उसको गर मारा तो क्या मारा

न मारा आपको, जो ख़ाक हो, इक्सीर[3] बन जाता
अगर पारे को ऐ इक्सीरगर[4], मारा तो क्या मारा

बड़े मूज़ी को मारा नफ़्से-अम्मारा को[5] गर मारा
नहंगो-अज़दहा-ओ-शेरे-नर[6] मारा तो क्या मारा

हंसी के साथ यां रोना है मिस्ले - क़ुलक़ुले-मीना[7]
किसीने क़हक़हा, ऐ बेख़बर, मारा तो क्या मारा

गया शैतान मारा एक सिजदे के न करने से
अगर लाखों बरस सिजदे में सर मारा तो क्या मारा

दिले-बदख़्वाह में[8] था मारना या चश्मे-बदबीं में[9]
फ़लक़ पर[10] 'ज़ौक़' ! तीरे-आह[11] गर मारा तो क्या मारा

---

१. निःसहाय को २. अत्याचारी ३. रसायन ४. कीमियागर ५. पापोन्मुख मन को ६. घड़ियाल, अजगर और शेर को ७. सुराही से निकलते समय शराब की आवाज़ की तरह ८. बुरा चाहने वाले दिल में ९. बुरा देखने वाली आंख में १०. आकाश पर ११. आह-रूपी तीर

नाला[1] है उनसे ब्यां दर्द-जुदाई करता
काम क़ासिद का[2] है ये तीरे-हवाई[3] करता

बैठ रहिए तो कफ़स[4] है अजब आराम की जा[5]
पर, है बेचैन हमें शौक़े-रिहाई[6] करता

बंद आंखें किए जाता है किधर तू कि तुझे
है तिरा नक़्शे-क़दम[7], चश्म-नुमाई[8] करता

नहीं गोशे-शनवा[9] बाग़े-जहां में[10], ग़ाफ़िल
वर्ना हर बरग[11] है यां[12] नग़मा-सराई करता[13]

'ज़ौक़' उस पाए-निगारीं का[14] जो है वस्फ़-निगार[15]
अश्के-ख़ूनी से[16] है काग़ज़ को हिनाई[17] करता

---

१. आर्तनाद २. पत्रवाहक ३. हवाई तीर ४. पिंजरा, कारागर ५. जगह ६. मुक्त होने की इच्छा ७. पद-चिह्न ८. आंखों का पथप्रदर्शन ९. सुनने वाले कान १०. संसार-रूपी उपवन में ११. पेड़ का पत्ता १२. यहां १३. गीत गाता है १४. चित्रित पांव का १५. बनाने वाला १६. खून के आंसुओं से १७. मेहंदी रंग में रंगता

आस्मां[1] दर्दे-मोहब्बत के जो क़ाबिल होता
तो किसी सोख़्ता का[2] आबला-ए-दिल[3] होता

मौत ने कर दिया लाचार वगर्ना इन्सां
है वो खुदबीं[4] कि ख़ुदा का भी न क़ाइल होता

दिल-गिरिफ़्तों की[5] अगर खाक चमन में होती
तो जहां ग़ुञ्चा[6] है गुलशन में, वहां दिल होता

आप आइना-ए-हस्तो में[7] है लो अपना हरीफ़[8]
वर्ना यां कौन था जो तेरे मुक़ाबिल होता

सीना-ए-चर्ख़ में[9] हर अख़्तर[10] अगर दिल है तो क्या
एक दिल होता मगर दर्द के क़ाबिल होता

---

१. आकाश, भाग्य २. जले हुए का ३. दिल-रूपी फफोला ४. अभिमानी ५. दिल अथवा प्रेम में ग्रस्त व्यक्तियों की ६. कली ७. जीवन-रूपी आइने में ८. शत्रु ९. आकाश की छाती में १०. सितारा

नाम यूं पस्ती में[1] बालातर[2] हमारा हो गया
जिस तरह पानी कुएं की तह में तारा हो गया

दांत यूं चमके हंसी में रात उस महपारा के[3]
मैंने समझा माहे-ताबां[4], पारा-पारा[5] हो गया

है मुक़ामे-ज़िन्दगी[6] ज़ेरे-दमे-शमशीरे-मर्ग[7]
हो गया जिस तरह कोई दम गुज़ारा, हो गया

एक दम भी हमको जीना हिज्र में था नागवार
पर उमीदे-वस्ल में[8] बरसों गवारा हो गया

दी शहादत[9] नश्शे की सुर्ख़ी से चश्मे-यार ने[10]
लो हमारा ख़ूनें-पिन्हां[11], आश्कारा[12] हो गया

दिल पे ज़ख़्मों की तरक़्क़ी से हुई और इक बहार
आगे था सद-बर्ग[13] ये गुल अब हज़ारा[14] हो गया

'ज़ौक़' इस बह्‌रे-जहां में[15] कश्तिए-उम्रे-रवां[16]
जिस जगह पर जा लगी वो ही किनारा हो गया

---

१. नीचाई में २. और भी ऊंचा ३. चांद के टुकड़े (प्रेयसी) के ४. चमकता चांद ५. टुकड़े-टुकड़े ६. जीवन का स्थान या अस्तित्व ७. मृत्यु-रूपी तलवार के नीचे ८. मिलने की आशा में ९. गवाही १०. प्रेयसी की आंख ने ११. निहित लहू १२. प्रकट १३. सौ पंखड़ियों वाला १४. हज़ार पंखड़ियों वाला १५. संसार-रूपी समुद्र में १६. आयु-रूपी बहती नाव

मैं कहां संगे-दरे-यार से[1] टल जाऊंगा
न वो पत्थर है फिसलना कि फिसल जाऊंगा

आज अगर राह न पाऊंगा तो कल जाऊंगा
कूचा-ए-यार में[2] मैं सर ही के बल जाऊंगा

अक़्ल से कह दो कि लाए न यहां अपनी किताब
मैं वो दीवाना हूं अभी घर से निकल जाऊंगा

दिल ये कहता है कि तू साथ न ले चल मुझको
जा के मैं वां तेरे क़ाबू से निकल जाऊंगा

गिर पड़ा आग में परवाना दमे-गर्मी-ए-शौक़[3]
समझा इतना भी न कमबख़्त कि जल जाऊंगा

आंख से अश्क सिफ़त[4] मुझको गिरा कर न संभाल
मैं नहीं वो कि संभाले से संभल जाऊंगा

जुंबिशे-बर्ग-सिफ़त[5] बाग़े-जहां में[6] ऐ 'ज़ौक़'
कुछ न हाथ आएगा तो हाथ ही मल जाऊंगा

---

१. प्रेयसी के दरवाजे के पत्थर से २. प्रेयसी की गली में ३. प्रेमताप के क्षण में ४. आंसू की तरह ५. पत्ते के हिलने की तरह ६. संसार-रूपी उपवन में

वो कौन है जो मुझ पे तअस्सुफ़[1] नहीं करता
पर मेरा जिगर देख कि मैं उफ़ नहीं करता

क्या क़ह्र[2] है, वक़्फ़ा[3] है अभी आने में उसके
और दम मिरा जाने में तवक़्क़ुफ़[4] नहीं करता

पढ़ता नहीं ख़त ग़ैर मिरा वां[5] किसी उन्वां[6]
जब तक कि वो मज़मूं में[7] तसर्रुफ़[8] नहीं करता

दिल फ़क्र की[9] दौलत से मिरा इतना ग़नी[10] है
दुनिया के ज़रो-माल पे मैं तुफ़ नहीं करता

ऐ 'ज़ौक़' तकल्लुफ़ में है तकलीफ़ सरासर
आराम में है वो, जो तकल्लुफ़ नहीं करता

---

१. पश्चात्ताप २. अत्याचार ३. समय ४. विलंब ५. वहां ६. शीर्षक, तरह ७. विषय में ८. परिवर्तन, कांट-छांट ९. दरिद्रता की १०. मालदार

नशा दौलत का बद-अतवार को[1] जिस आन[2] चढ़ा
सर पे शैतान के इक और भी शैतान चढ़ा

इश्क़ के ढब पे न कोई बजुज़[3] इन्सान चढ़ा
इसके क़ाबू में चढ़ा तो यही नादान चढ़ा

देखिए मिल्लतो-दीं[4] कितने करेगा बरबाद
वाओ के[5] घोड़े पे वो दुश्मने-ईमान चढ़ा

देखो क़िस्मत का लिखा, उसने पढ़ा ख़त सौ बार
ध्यान पर मेरा न मज़मूं[6] किसी उन्वान[7] चढ़ा

हज़रते-इश्क़ की दरगाह में आकर ऐ 'ज़ौक़'
दीनो-दिल देते हैं सब गब्रो-मुसलमान[8] चढ़ा

---

१. दुष्ट-व्यक्ति को २. समय ३. सिवाय ४. धर्म एवं सम्प्रदाय ५. हवा के ६. विषय ७. तरह ८. हिन्दू-मुसलमान

नीमचा[1] यार ने जिस वक़्त बग़ल में मारा
जो चढ़ा मुंह, उसे मैदाने - अजल में[2] मारा

उस लबो - चश्म से[3] है ज़िन्दगी - ओ - मौत अपनी
कब कभी पल में जिलाया, कभी पल में मारा

अजल आई न शबे - हिज्र में[4] और हमको फ़लक[5]
बे - अजल तूने तमन्नाए - अजल में[6] मारा

आंख से आंख है लड़ती, मुझे डर है दिल का
कहीं ये जाए न इस जंगो - जदल में मारा

न हुआ पर न हुआ 'मीर'[7] का अन्दाज़ नसीब
'ज़ौक़' यारों ने बहुत ज़ोर ग़ज़ल में मारा

---

१. कटार २. मृत्यु-रूपी मैदान में ३. होंठों और कपोलों (प्रेयसी) से ४. विरह की रात में ५. आकाश, खुदा ६. मृत्यु की आकांक्षा में ७. प्रसिद्ध उर्दू शायर मीर तक़ी 'मीर'

जान के जी में सदा जीने का अर्मां ही रहा
दिल को भी देख किए ये भी परेशां ही रहा

कब लिबासे-दुनयवी में[1] छुपते हैं रौशन-ज़मीर[2]
खाना-ए-फ़ानूस में[3] भी शो'ला उरियां[4] ही रहा

आदमीयत और शै है इल्म है कुछ और शै
कितना तोते को पढ़ाया पर वो हैवां[5] ही रहा

मुद्दतों दिल और पैकां[6] दोनों सीने में रहे
आखिरश[7] दिल बह गया खूं हो के पैकां ही रहा

दीनो-ईमां[8] ढूंडता है 'ज़ौक़' क्या इस वक़्त में
अब न कुछ दीं ही रहा बाक़ी न ईमां ही रहा

---

१. सांसारिक आवरण में २. महात्मा ३. फ़ानूस के घेरे में ४. नग्न, स्पष्ट ५. जानवर ६. तीर की नोक ७. अन्ततः ८. धर्म और विश्वास

आंखें मिरी तलवों से वो मल जाए तो अच्छा
है हसरते-पाबोस[1], निकल जाए तो अच्छा

बीमारे-मोहब्बत ने लिया तेरे संभाला
लेकिन वो संभाले से संभल जाए तो अच्छा

फ़ुर्क़त में[2] तिरी, तारे-नफ़स[3] सीने में मेरे
कांटा सा खटकता है, निकल जाए तो अच्छा

वो सुब्ह को आएं तो करूं बातों में दोपहर
और चाहूं कि दिन थोड़ा सा ढल जाए तो अच्छा

ढल जाए जो दिन भी इसी तरह करूं शाम
और चाहूं कि गर आज से कल जाए तो अच्छा

दिल गिर के नज़र से तिरी उठने का नहीं फिर
ये गिरने से पहले ही संभल जाए तो अच्छा

है क़तए-रहे-इश्क़ में[4] ऐ 'ज़ौक़' अदब शर्त
जूं शम्अ़ तू अब सर ही के बल जाए तो अच्छा

---

१. पांव चूमने की इच्छा २. बिछोह में ३. श्वास का तार
४. प्रेम-मार्ग छोड़ने में

मिरे तालेअ़ में[1] है क्या काम ऐ गर्दू[2] सितारे का
चमक जाना है काफ़ी आतिशे - दिल के[3] शरारे का

जिसे कहते हैं बह्रे - इश्क़[4], उसके दो किनारे हैं
अजल[5] नाम इस किनारे का, अबद[6] नाम उस किनारे का

नफ़स[7] है जादा-ए-उम्रे-रवां[8], जिस तरह से गुज़रे
यहां पूछे है ऐ गुमराह क्या रस्ता गुज़ारे का

न पकड़ें दामने - इलियास[9], गिर्दाबे - बला में[10] हम
कि बदतर डूबकर मरने से है, जीना सहारे का

तिरा हर मू-ए-मिज़गां[11] दिल को अंगुश्ते-इशारत[12] है
समझने वाला मुझ सा चाहिए पर इस इशारे का

फ़क़त[13] तारे-नफ़स[14] का 'ज़ौक़' ख़त्ते-जादा[15] काफ़ी है
पए - उम्रे - रवां[16] क्या चाहिए रस्ता गुज़ारे का

---

१. भाग्य में २. आकाश ३. मन की आग या प्रेमाग्नि के ४. सृष्टिकाल ५. अंतकाल ६. अनन्तता ७. श्वास ८. व्यतीत होती आयु का मार्ग ९. इलियास (नदी में भटकने वालों को मार्ग दिखाने वाले बुज़ुर्ग) का दामन या सहारा १०. डुबोने वाले भंवर में ११. पलकों का बाल १२. मार्ग बताने वाली उंगली १३. केवल १४. श्वास के तार का १५. मार्ग की लीक १६. व्यतीत होती आयु के लिए

दरिया-ए-अश्क[1] चश्म से[2] जिस आन[3] बह गया
सुन लीजियो कि अर्श का[4] ऐवान[5] बह गया

ज़ाहिद[6] ! शराब पीने से काफ़िर हुआ मैं क्यों
क्या डेढ़ चुल्लू पानी में ईमान बह गया

यूं रोए फूट-फूट के पांओं के आबले
नाला-सा एक सू-ए-बियाबान[7] बह गया

कश्ती-सवारे-उम्र[8] हैं बह्‌रे-फ़ना में[9] हम
जिस दम बहा के ले गया तूफ़ान, बह गया

था 'ज़ौक़' पहले दिल्ली में पंजाब का सा हुस्न
पर अब वो पानी, कहते हैं, मुल्तान[10] बह गया

---

१. आंसुओं की नदी २. आंखों से ३. क्षण ४. आकाश का ५. महल ६. विरक्त, पारसा ७. बियाबान की ओर ८. आयु-रूपी नाव पर सवार ९. मृत्यु-सागर में १०. पश्चिम पंजाब (अब पाकिस्तान) का एक नगर

मिरे सीने से तेरा तीर जब ऐ जंगजू[1] निकला
दहाने - ज़ख्म से[2] खूं होके हर्फ़े - आरज़ू[3] निकला

कहीं तुझको न पाया गर्चे हमने इक जहां ढूंडा
फिर आखिर दिल ही में देखा, बग़ल ही में से तू निकला

ख़जिल[4] अपने गुनाहों से हूं मैं यां तक कि जब रोया
तो जो आंसू मिरी आंखों से निकला सुर्ख़रू[5] निकला

घिसे सब नाखुने - तद्बीर[6] और टूटे सरे-सोज़न[7]
मगर जो दिल में था कांटा न वो हर्गिज़ कभू निकला

उसे अय्यार[8] पाया यार समझे 'ज़ौक़' हम जिसको
जिसे यां दोस्त हमने अपना जाना वो अदू[9] निकला

---

१. लड़ाकू (प्रेयसी) २. घाव के मुंह से ३. प्रेम-निवेदन ४. लज्जित ५. सफल या प्रसन्न ६. कर्म अथवा कोशिश-रूपी नाखून ७. सुइयों की नोकें ८. चालाक ९. शत्रु

नाला[1] जब दिल से चला सीने में फोड़ा अटका
चलती गाड़ी में दिया इश्क़ ने रोड़ा अटका

जल्द आ वादा-ए-दीदार पे[2] ऐ वादा-ख़िलाफ़
कब तक अटका रहे दम आंखों में, थोड़ा अटका

तौसने-उम्र[3]-र वां हर नफ़स[4] उड़ता ही रहा
कभी मैदाने-वफ़ा में न ये घोड़ा अटका

भागा मजनूं मिरी वहशत से बगूले की तरह
सामने मेरे ज़रा भी न भगोड़ा अटका

ले गए मर के भी ऐ 'ज़ौक़' रुकावट दिल में
हाथ तलवार का जो यार ने छोड़ा, अटका

---

१. आर्तनाद २. दर्शन देने के वायदे पर ३. आयु-रूपी घोड़े
४. दम

ब-रंगे-गुल[1] सबा से[2] कब खिला दिलगीर[3] दिल मेरा
कि है बाग़े - जहां में गुंचा - ए - तस्वीर[4] दिल मेरा

संभाले रख ज़रा ऐ आस्मां देख अपने दामन को
ज़मीं पर खींचता है नाला - ए - शबगीर[5] दिल मेरा

बुतो, गर हुस्न की दौलत से तुम ही बन गए पारस
हुआ है कीमिया - ए - इश्क़ से[6] इक्सीर[7] दिल मेरा

कभी मिन्नत की ज़ंजीर उनको पहने उसने देखा था
है अब तक पहने तारे - अश्क की[8] ज़ंजीर दिल मेरा

बुतों का इश्क़ है गर 'ज़ौक़' तो सारी ख़ुदाई में
करेगा शहर-शहर इक दिन मुझे तशहीर[9] दिल मेरा

---

१. फूल के (रंग में) समान २. प्रभात-समीर से ३. उदास मन ४. चित्रित कली ५. रातों का रोना ६. प्रेम-रसायन ७. रामबाण ८. आंसुओं के तार की ९. बदनाम

दुश्मने - जां यक - ब - यक सारा ज़माना हो गया
हाए तासीरे - मोहब्बत[1] ! ये सितम क्या हो गया

तुममें था या मुझमें था दिल फिर कहो क्या हो गया
दिल के जाने का तो आलम को[2] अचंभा हो गया

बादा-ए-गुलगूं ने[3] रंगे - रुख़ को[4] रौशन[5] कर दिया
पहले था गुलरंग[6] मुखड़ा फिर भबूका[7] हो गया

यादे - ज़ुल्फ़े - अंबरीं में[8] रात भर आहें भरीं
गुंबदे - गर्दूं[9] सियह सारे का सारा हो गया

'ज़ौक़' ने ही ज़ुल्फ़ को छेड़ा तो ले मुझसे क़सम
तूने ख़ुद छेड़ा उसे और बरहम[10] इतना हो गया

---

१. प्रेम-प्रभाव २. संसार को ३. लाल शराब ने ४. चेहरे के रंग को ५. प्रकाशमान ६. पुष्प-वर्ण ७. अत्यन्त लाल ८. सुगंधित अंबर जैसी केशराशि की याद में ९. आकाश का गुम्बद १०. नाराज़

तिरे हाथों कोई आवारा ऐ गर्दूं[1] न ठहरेगा
वलेकिन तू भी गर चाहे कि मैं ठहरूं, न ठहरेगा

वो दौलत कर तलब जिससे कि दिल हो जाए मुस्तग़नी[2]
अगर हाथ आएगा गंजीना - ए - कारूं[3], न ठहरेगा

गिरा हूं चश्मे - साक़ी से[4], मिरी तस्वीर में भी गर
बना देगा कोई जामे - मए - गुलगूं[5] न ठहरेगा

कोई दम ठहरने दो उसको बाली[6] पर मिरे यारो
अभी से क्या कहूं हाले-दिले-महज़ूं[7] न ठहरेगा

यही है दिल की बेताबी तो बाद-अज़-मर्ग[8] भी क़ातिल
न ठहरा है ज़मीं पर आशिक़े-महज़ूं[9] न ठहरेगा

---

१. आकाश २. कामनारहित ३. कारूं का खज़ाना ४. साक़ी की नज़रों से ५. लाल शराब का प्याला ६. सिरहाने ७. दुखी दिल का हाल ८. मरने के बाद ९. दुखी प्रेमी

उसे हमने बहुत ढूंढा, न पाया
अगर पाया तो खोज अपना न पाया

मुक़द्दर ही पे गर सूदो-ज़ियां[1] है
तो हमने कुछ यहां खोया न पाया

सुराग़े-उम्रे-रफ़्ता[2] हो तो क्योंकर
कहीं जिसका निशाने-पा[3] न पाया

कहे क्या हाए ज़ख्मे-दिल हमारा
दहन[4] पाया, लबे-गोया[5] न पाया

कभी तू, और कभी तेरा रहा ग़म
ग़रज़ खाली दिले-शैदा[6] न पाया

नज़ीर[7] उसका कहां आलम में[8] ऐ 'ज़ौक़'
कोई ऐसा न पाएगा, न पाया

---

१. लाभ-हानि २. बीती आयु का निशान-पता ३. पदचिह्न ४. मुंह ५. बोलने वाले होंठ ६. आसक्त मन ७. सदृशता ८. संसार में

मैं हिज्र में[1] मरने के क़रीं[2] हो ही चुका था
तुम वक़्त पे आ पहुंचे, नहीं हो ही चुका था

बरहम किया उस शोख़ को, क्यों छेड़ के फिर ज़ुल्फ़
ऐ दिल, वो अभी चीं - ब - जबीं हो ही चुका था[3]

आने से मिरे ढेर गए आप वगर्ना
जाने का इरादा तो कहीं हो ही चुका था

जो कुछ कि हुआ हमसे, वो किस तरह न होता
हुक्मे - अज़ली[4] 'ज़ौक़' ! युंही हो ही चुका था

○

ऐ सनम[5] क्या पूछता है हाल इस महजूर का[6]
दिल न अटकाए कहीं अल्लाह बेमक़दूर का[7]

---

१. जुदाई में २. क़रीब ३. माथे पर बल डाल चुका था
४. आदिकालिक आदेश ५. प्रियतम ६. वियोगी का ७. असमर्थ का

नविशते से[1] हुआ इक हर्फ़ भी हरगिज़ न बेशो-कम
जो पेशानी पे था लिक्खा हुआ वो पेश सब आया

तिरे डर से न आया पास कोई नीम जानों के
मगर रोना कभी चुप्के से बाद-अज़-नीम-शब[2] आया

वो आएं या न आएं, हम नहीं रंजीदा-दिल उनसे
मगर ये रंज है क्यों रंज हमसे बेसबब आया

मैं अपने 'ज़ौक़' के क़ुरबां कि मस्ती में मोहब्बत की
बुलाया किसने इसको ? जब ये आया बेतलब आया

O

शुक्र पर्दे में ही उस बुत को ख़ुदा ने रक्खा
वर्ना ईमान गया ही था, ख़ुदा ने रक्खा

---

१. भाग्य के लेख से २. आधी रात के बाद

न करता ज़ब्त मैं नाला[1] तो फिर ऐसा धुआं होता
कि नीचे आस्मां के और नया इक आस्मां होता

जो रोता खोलकर जी तंगनाए-दहर में[2] आशिक़
तो जू-ए-कहकशां में[3] भी फ़लक पर[4] खूं रवां होता

बगूला गर न होता वादी-ए-वहशत में[5] ऐ मजनूं
तो गुंबद हमसे सरगश्तों की[6] तुरबत पर[7] कहां होता

न करता ज़ब्त मैं गिरिया तो ऐ 'ज़ौक़' इक घड़ी भर में
कटोरे की तरह घड़ियाल के ग़र्क़ आस्मां होता

○

ऐ 'ज़ौक़'! अगर है होश तो दुनिया से दूर भाग
इस मैकदे में[8] काम नहीं होशियार का

---

१. रोना २. छोटे-से संसार में ३. आकाश गंगा-रूपी नदी में ४. आकाश पर ५. प्रेमोन्माद की घाटी में ६. पागलों की ७. क़ब्र पर ८. मधुशाला में

इस तपिश का[1] है मज़ा दिल ही को हासिल होता
काश मैं इश्क़ में सर - ता - ब - क़दम[2] दिल होता

करता बीमारे - मोहब्बत का मसीहा[3] जो इलाज
इतना दिक़ होता कि जीना उसे मुश्किल होता

आप आइना - ए - हस्ती में[4] है तू अपना हरीफ़[5]
वर्ना यां कौन था जो तेरे मुक़ाबिल होता

होती गर उक़्दा - कुशाई[6] न यदे - अल्लाह के साथ[7]
'ज़ौक़' हल क्योंकि[8] मिरा उक़्दा-ए-मुश्किल[9] होता

○

हम आप जल बुझे, मगर इस दिल की आग को
सीने में हमने 'ज़ौक़' ! न पाया बुझा हुआ

---

१. जलने का २. सिर से पांव तक ३. ईसा मसीह (रोगियों को स्वस्थ करने वाला) ४. अस्तित्व-रूपी दर्पण में ५. शत्रु ६. समस्या का समाधान ७. अल्लाह के हाथ—हज़रत अली के साथ ८. क्योंकर, कैसे ९. कठिन समस्या

हर इक से है क़ौल[1] आशनाई का[2] झूटा
वो काफ़िर है सारी ख़ुदाई का झूटा

न क्यों तेरे दांतों से झूटा हो मोती
कि दावा किया था सफ़ाई का झूटा

रसाई हुई[3] जबकि दामन तक उनके
हुआ हाथ अपनी रसाई का झूटा

ख़ुदा जाने है 'ज़ौक़' झूटा कि सच्चा
गर वो नहीं आशनाई का झूटा

○

शहीद ऐ 'ज़ौक़', सीने में हुई हैं हसरतें लाखों
मिरी जो आह है, गोया वो है इक नख़्ल[4] मातम का

---

१. वायदा २. प्रणय-सम्बन्धों का ३. पहुंच हुई ४. पौधा
बढ़ने वाला)

आदम दुबारा सू-ए-बहिशते-बरीं[1] गया
देखो जहां खराब हुआ था वहीं गया

दुनिया गई कि इश्क़ में ईमानो-दीं गया
वो मिल गया तो जानिए कुछ भी नहीं गया

खुर्शीद-बार[2] चर्ख़ पे[3] चमका कोई तो क्या
आखिर को फिर जो देखा तो ज़ेरे-ज़मीं[4] गया

देखा कहीं न उसको, जो देखा तो अपने पास
मैं दूर-दूर ज्यूं निगहे-दूरबीं[5] गया

○

आना तो खफ़ा आना, जाना तो रुला जाना
आना है तो क्या आना, जाना है तो क्या जाना

---

१. जन्नत की ओर २. सूर्य की तरह ३. आकाश पर ४. ज़मीं के नीचे ५. दूरबीन की नज़र या दूरदर्शी

लाले-लबो-दंदाने-सनम का[1] दिल ने जब से खयाल किया
सुम्म-बुकुम[2] कह के है गोया हमने ज़बां को लाल किया

लेगा दिला[3] इस इश्क़ से क्या तू जिसने कोहो-सहरा में[4]
मजनूं का वो हाल किया फ़रहाद का है वो हाल किया

फिरता है तू ऐ चांद के टुक्ड़े बसकि[5] शबो-रोज़ आंखों में
दिल ने रौशन हो के शबे-फ़ुर्क़त को[6] है रोज़े-विसाल[7] किया

आग है दिल में, दर्द जिगर में, आंख में आंसू, लब पे फ़ुग़ां[8]
इश्क़ ने उसके 'ज़ौक़' हमारा देख लो है ये हाल किया

O

या रब ! ये इस ज़माने के लोगों को क्या हुआ
जिसका बुरा हो, इनको ये कहना भला हुआ

---

१. प्रेयसी के लाल होंठों और दांतों का २. गूंगा-बहरा ३. ऐ दिल ४. पहाड़ों और जंगलों में ५. बहुत ६. विरह की रात को ७. मिलन-दिवस ८. होंठों पर फ़रियाद

चाहे आलम में[1] फ़रोग़[2] अपना, तो हो घर से जुदा
देख चमके है शरर[3] होते ही पत्थर से जुदा

दिल मिरा या रब न हो ज़ुल्फ़े-मुअंबर से[4] जुदा
सर जुदा हो तन से ये सौदा[5] न हो सर से जुदा

हज़रते -आदम को शैतां ने निकाला खुल्द से[6]
ग़ैर ने[7] हमको किया है कू - ए - दिलबर से[8] जुदा

'ज़ौक़' है तर्के - वतन में[9] साफ़ नक्से - आबरू[10]
कितने फिरते हैं गुहर[11] होकर समुन्दर से जुदा

○

कुछ दर्दे - निहां[12] दिल का, अयां[13] हो नहीं सकता
गूंगे का सा है ख्वाब, बयां हो नहीं सकता

---

१. संसार में २. उन्नति ३. चिंगारी ४. सुगन्धित केशराशि से ५. उन्माद ६. जन्नत से ७. प्रतिद्वन्द्वी ने ८. प्रियतम की गली से ९. स्वदेश छोड़ने में १०. अपमान ११. मोती १२. निहित पीड़ा १३. प्रकट

नीमचा[1] जो मोल वो बांका जवां लेने लगा
मौत के जी में मज़े ये नीम - जां लेने लगा

तीर चुटकी में लिया उसने पए - जाने - अदू[2]
रश्क[3] मेरे दिल में क्या-क्या चुटकियां लेने लगा

जिसने की इस मैकदे में[4] बैअ़'ते - दस्ते - सबू[5]
वो क़दम तेरे बस ऐ पीरे - मुग़ां[6] लेने लगा

मुझको हर शब[7] हिज्र की[8], होने लगी जूं रोज़े-हश्र[9]
मुझसे ये किस दिन के बदले आस्मां[10] लेने लगा

○

आदमी गर हो मुकद्दर[11] क्या क़सूर इदराक का[12]
खाक का पुतला है ये कुछ तो असर हो खाक का

---

१. खंजर २. मेरे प्रतिद्वन्द्वी की जान लेने के लिए ३. ईर्ष्या ४. शराब खाने में ५. शराब के मटके तक पहुंचने वाले हाथ या व्यक्ति की मुरीदी ६. रसाध्यक्ष ७. रात ८. विरह की ९. प्रलय-दिवस की तरह १०. आकाश, ईश्वर ११. मैला १२. बुद्धि का

जुदा हों यार से हम और न हो रक़ीब[1] जुदा
है अपना-अपना मुक़द्दर[2] जुदा, नसीब[3] जुदा

तिरी गली से निकलते ही अपना दम निकला
रहे है क्योंकि गुलिस्तां से[4] अंदलीब[5] जुदा

फ़िराक़े-ख़ुल्द से[6] गंदुम है सीना-चाक[7] अब तक
इलाही हो न वतन से कोई ग़रीब जुदा

करें जुदाई का किस-किसका रंज हम ऐ 'ज़ौक़'
कि होने वाले हैं हम सबसे अनक़रीब[8] जुदा

○

मसजिद में उसने हमको आंखें दिखा के मारा
काफ़िर की देखो शोख़ी घर में ख़ुदा के मारा

---

१. प्रतिद्वन्द्वी २, ३. भाग्य ४. बाग़ से ५. बुलबुल ६. जन्नत से निकाले जाने के बाद से ७. छाती फाड़े हुए (गेहूं के दाने के बीच पड़ी रेखा की ओर संकेत है) ८. शीघ्र ही

पी भी जा 'ज़ौक़' न कर पेशो-पसे-जामे-शराब[1]
लब पे तौबा, तिरे दिल में हवसे - जामे - शराब[2]

बाज़गश्त[3] अपनी है, यूं जानिबे - क़स्सामे - अज़ल[4]
जैसे साक़ी की तरफ़ बाज़पसे - जामे - शराब[5]

बेख़बर क़ाफ़िला - ए - ऐश[6] गुज़र जाता है
बेज़बां है जो दहाने - जरसे - जामे - शराब[7]

समझे मैख़ाने की अज़मत तो न बैठे हरगिज़
सरे - जमशैद पे[8] उड़कर मगसे - जामे - शराब[9]

'ज़ौक़' जल्दी मए - गुलरंग से[10] भर साग़रे-मुल[11]
लबे - नाज़ुक को है उसके हवसे - जामे - शराब

---

१. शराब पीने में आनाकानी २. शराब के प्याले की लालसा ३. प्रतिध्वनि या वापसी ४. ख़ुदा की ओर ५. ख़ाली प्याले की वापसी ६. ऐश-रूपी क़ाफ़िला ७. प्याला-रूपी घण्टे का मुंह ८. जमशैद बादशाह के सिर पर ९. शराब के प्याले की मक्खी १०. पुष्प-वर्ण शराब से ११. शराब का प्याला

बरसों हो हिज्र, वस्ल हो गर एक दम नसीब
कम होगा मुझ सा कोई मोहब्बत में कमनसीब

माही[1] हो या हो माह[2], वो हो एक या हज़ार
बेदाग़ हो न दस्ते-फ़लक से[3] दिरम[4] नसीब

सौ बार जूं क़लम हो ज़बां शम्अ़ की क़लम
इक हर्फ़ हो न मिस्ले-ज़बाने-क़लम[5] नसीब

ग़ाफ़िल जो दम की[6] आमदो-शुद से[7] न होवे तू
हर दम है तुझको सैरे-वुजूदो-अदम[8] नसीब

दे जिसको अपने हाथ से तू एक जामे-मय[9]
साक़ी! दिए ख़ुदा ने उसे मिसले-जम[10] नसीब

---

१. एक धारणा के अनुसार वह कल्पित मछली, जिसकी पीठ पर धरती टिकी हुई है २. चांद ३. आकाश के हाथ से ४. दमड़ी ५. क़लम की ज़बान (नोक) की तरह ६. सांस की ७. आने-जाने से ८. अस्तित्व-अनस्तित्व की सैर ९. शराब का प्याला १०. अत्यधिक

हश्र[1] तक दिल में रही उस सर्व-क़ामत की[2] तलब
ये तलब अपनी थी या रब किस क़यामत की तलब

वास्ते नज़्ज़ारा-ए-क़ातिल के[3] फ़ुर्सत चाहिए
और यहां फ़ुर्सत कहां जो कीजै फ़ुर्सत की तलब

बढ़ गई है ऐश में हिर्स इस क़दर अपनी कि है
ग़म पे ग़म की आरज़ू हसरत पे हसरत की तलब

जो हलावत[4] चाहता है ज़िन्दगी की चर्ख़ से[5]
तू कभी हरगिज़ न कर उससे राहत की तलब

वतने-मादर[6] ही से जब पैदा हुआ तकलीफ़ से
यां कहां राहत कि तू करता है राहत की तलब

गर गुलिस्ताने-जहां में[7] तंग है तू ग़ुन्चावार[8]
कर कुशादा[9] दिल से अपने 'ज़ौक़े'-वुसअत की[10] तलब

---

१. प्रलय, क़यामत २. सरू के बूटे ऐसे लम्बे क़द वाले (प्रियतम) की ३. हत्यारे के हत्या-दृश्य के लिए ४. मृदुलता ५. आकाश अथवा भाग्य से ६. मां का पेट ७. संसार-रूपी उपवन में ८. कली की तरह ९. खुला १०. फैलाव की अभिरुचि

मालूम जो होता हमें अंजामे - मोहब्बत[1]
लेते न कभी भूल के हम नामे - मोहब्बत

की जिसने ज़रा रस्मे - मोहब्बत उसे मारा
पैग़ामे - क़ज़ा[2] है तिरा पैग़ामे - मोहब्बत

मे'राज[3] समझ 'ज़ौक़' तू क़ातिल की सिनां को[4]
चढ़ सर के बल इस ज़ीने पे ता बामे-मोहब्बत[5]

○

हो जाए है ज़ियादा गिरां - बारी - ए - गुनाह[6]
पीरी में[7] क्यों खमीदा न हो[8] ज़ेर - बार पुश्त[9]

रहता सुख़न से[10] नाम क़यामत तलक है 'ज़ौक़'
औलाद से रहे यही दो पुश्त, चार पुश्त

---

१. प्रणय का परिणाम २. मृत्यु का सन्देश ३. सीढ़ी ४. तीर की नोक ५. प्रणय-रूपी छत पर ६. पाप का बोझ ७. बुढ़ापे में ८. क्यों न झुके ९. कमर १०. शायरी या कलाकृतियों से

ठहरी है उनके आने की अब कल पे जा सलाह
ऐ जाने-बर-लब-आमदा[1], है तेरी क्या सलाह

उस बदमुआमला से तिरा क्या मुआमला
किस बद-सलाह ने[2] तुझे दी ये दिला[3], सलाह

रहता है अपना इश्क़ में यूं दिल से मश्वरा
जिस तरह आशना से[4] करे आशना सलाह

करती ख़राब उसीको है तेरी निगाहे-मस्त
जिसको कि देखती है निकोकारो-बासलाह[5]

है ये मिरा रफ़ीक़[6] यही है मिरा शफ़ीक़[7]
लूं किससे वां के जाने की दिल के सिवा सलाह

ऐ 'ज़ौक़' जा न होशो-ख़िरद की[8] सलाह पर
दे इश्क़ जो सलाह वही है बजा सलाह

---

१. होंठों पर आई हुई जान २. ग़लत सलाह देने वाले ने ३. ऐ दिल ४. परिचित, प्रियतम से ५. पवित्र आचरण वाला ६. मित्र ७. कृपालु ८. बुद्धि की

क्या आए तुम जो आए घड़ी दो घड़ी के बाद
सीने में सांस होगी अड़ी दो घड़ी के बाद

कोई घड़ी अगर वो मुलाइम हुए तो क्या
कह बैठेंगे फिर एक कड़ी दो घड़ी के बाद

क्या रोका अपने गिरिये को[1] हमने कि लग गई
फिर वो ही आंसुओं की झड़ी दो घड़ी के बाद

कल हमने उससे तर्के-मुलाक़ात[2] की तो क्या
फिर उस बग़ैर कल[3] न पड़ी दो घड़ी के बाद

गर दो घड़ी तक उसने न देखा इधर तो क्या
आखिर हमीं से आंख लड़ी दो घड़ी के बाद

क्या जाने दो घड़ी वो रहे 'ज़ौक़' किस तरह
फिर तो न ठहरे पांव घड़ी दो घड़ी के बाद

---

१. रोने को २. न मिलना ३. चैन

तेरा बीमार न संभला जो संभाला लेकर
चुप्के ही बैठ रहे दम को[1] मसीहा[2] लेकर

शर्ते-हिम्मत[3] नहीं मुजरिम हो गिरफ़्तारे-अज़ाब[4]
तूने क्या छोड़ा अगर छोड़ेगा बदला लेकर

मुझ-सा मुश्ताक़े-जमाल[5] एक न पाओगे कहीं
गर्चे ढूंडोगे चिराग़े - रुख़े - ज़ेबां[6] लेकर

तेरे क़दमों में ही रह जाएंगे, जाएंगे कहां
दश्त में[7] मेरे क़दम आबला-ए-पा[8] लेकर

वां से यां आए थे ऐ 'ज़ौक़' तो क्या लाए थे
यां से तो जाएंगे हम लाख तमन्ना लेकर

---

१. श्वास को २. ईसा (रोगियों को नीरोग और मृतकों को जिलाने वाला) ३. हिम्मत की शर्त ४. कष्ट में फंसा हुआ ५. सौन्दर्य-प्रेमी ६. सुन्दर मुखड़े-रूपी चिराग़ ७. जंगल में ८. पांव के छाले

निगह[1] नहीं हर्फ़े-दिलनशीं[2] था, दहन की[3] तंगी से तंग होकर
निकल के रस्ते से चश्मे-फ़त्तां के[4] दिल में बैठा ख़दंग[5] होकर

वो चश्मे-मख़्मूर[6] इक नज़र से चुभोए लाखों जो नेशतर से[7]
तो हो रवां हर रगे-जिगर से लहू मए-लालारंग[8] होकर

जो रंगे-उल्फ़त से[9] आशना[10] हैं वो गिर पड़े पर भी ख़ुशनुमा हैं
कि रंग ही से गिरांबहा[11] हैं अक़ीक़ो-याक़ूत[12] संग[13] होकर

सफ़ा-ए-दिल की[14] यही है सूरत कि दिल में आने न दे कदूरत[15]
कि बैठ जाएगी बिज़्ज़रूरत[16] इस आइने पे ये ज़ंग होकर

हलावतो-शर्मे-पासदारी[17] जहां में है 'ज़ौक़' रंज-ओ-ख़्वारी
मज़े से ग़ुज़री अगर गुज़ारी किसीने बे-नामो-नंग[18] होकर

---

१. नज़र २. दिल में घर कर जाने वाली बात ३. मुंह की ४. ज़ालिम आंख के ५. तीर ६. मस्त आंखें ७. नश्तर से ८. लाल शराब ९. प्रेम के रंग-ढंग से १०. परिचित ११. बहुमूल्य १२. दो जवाहरात के नाम १३. पत्थर १४. दिल की सफ़ाई १५. मैल, शत्रुता १६. अवश्य १७. शिष्टता और मधुरता १८. निर्लज्ज

कल गए थे तुम जिसे बीमारे-हिज्रां[1] छोड़कर
चल बसा वो आज सब हस्ती का सामां[2] छोड़कर

तिफ़्ले-अश्क[3] ऐसा गिरा दामाने-मिज़गां[4] छोड़कर
फिर न उट्ठा कूचा-ए-चाके-गिरेबां[5] छोड़कर

सर्द-मेहरी से[6] किसी की आग से दिल सर्द है
यां से हट जा धूप ऐ अब्रे-बहारां[7] छोड़कर

गर ख़ुदा देवे क़नाअ़त[8] माहे-यक-हफ़्ता[9] की तरह
दौड़े सारी को कभी आधी न इन्सां छोड़कर

पढ़ ग़ज़ल ऐ 'ज़ौक़' कोई गर्म सी तू अब बजा[10]
जानिबे-मज़मून[11] तर्ज़े-तुफ़्ता-जानां[12] छोड़कर

---

१. विरह का रोगी २. सामान ३. आंसू-रूपी बालक ४. पलकों का दामन ५. फटे गिरेबान-रूपी गली ६. उदासीनता से ७. वसन्त ऋतु के बादल ८. सन्तोष ९. अष्टमी का चांद १०. बेशक ११. विषय की ओर १२. दुखियों का ढंग

मैं वो मजनूं हूं जो निकलूं कुंजे - ज़िन्दां[1] छोड़कर
सेबे - जन्नत[2] तक न खाऊं संगे - तिफ़्लां[3] छोड़कर

मैं हूं वो गुमनाम जब दफ़्तर में[4] नाम आया मिरा
रह गया बस मुन्शी-ए-क़ुदरत[5] जगह वां छोड़कर

अहले - जौहर को[6] वतन में रहने देता गर फ़लक[7]
लाल[8] क्यों इस रंग से आता बदख़्शां छोड़कर

घर से भी वाक़िफ़ नहीं उसके कि जिसके वास्ते
बैठे हैं घरबार सब हम ख़ाना - वीरां[9] छोड़कर

इन दिनों गर्चे दकन में है बड़ी क़द्रे - सुख़न[10]
कौन जाए 'ज़ौक़' पर दिल्ली की गलियां छोड़कर

---

१. बन्दीगृह का कोना २. जन्नत का सेब (परम्परा के अनुसार आदिनारी हव्वा ने आदिपुरुष आदम को जन्नत में सेब खिला दिया था, जिसके दण्डस्वरूप ख़ुदा ने उन्हें धरती पर भेज दिया) ३. बच्चों द्वारा मारे (पागलों को) जाने वाले पत्थर ४. ख़ुदा के दफ़्तर में ५. भाग्य लिखने वाला मुन्शी ६. गुणवानों को ७. आकाश, भाग्य ८. एक हीरे का नाम जो बदख़्शां नामक देश में पाया जाता है ९. वीरान घर १०. शायरी की क़द्र

बादाम दो जो भेजे हैं बटुए में डालकर
ईमा[1] ये है कि भेज दें आंखें निकालकर

लेकर बुतों ने[2] जान अब ईमां पे डाला हाथ
दिल क्या किनारे हो गया सबको संभालकर

पूछो चले हैं कौन से का'बे को अहले-दर्द[3]
मुल्के-फ़ना[4] है, जाएं ज़रा दिल संभालकर

तस्वीर उनकी हज़रते-दिल खींच लाएं गर
रख देंगे हम भी पांव पे आंखें निकालकर

दिल को रफ़ीक़[5] हुस्न में अपना समझ न 'ज़ौक़'
टल जाएगा ये अपनी बला तुझ पे टालकर

---

१. उद्देश्य २. माशूक़ों ने ३. दर्द वाले (प्रेमी) ४. मृत्यु का देश
५. साथी, मित्र

बुलबुल हूं, सहने-बाग़ से[1] दूर और शिकस्ता पर[2]
परवाना हूं, चिराग़ से दूर और शिकस्ता पर

उस मुर्ग़े-नातुवां पे[3] है हसरत जो रह गया
मुर्ग़ाने-कोहो-राग़ से[4] दूर और शिकस्ता पर

क्या ढूंडे दश्ते-गुमशुदगी में[5] मुझे कि है
अंक़ा[6] मिरे सुराग़ से दूर और शिकस्ता पर

ऐ 'ज़ौक़' मेरे ताइरे-दिल[7] को कहां फ़राग़[8]
कोसों है वो फ़राग़ से दूर और शिकस्ता पर

○

वां से यां आए थे ऐ 'ज़ौक़' तो क्या लाए थे
यां से तो जाएंगे हम लाख तमन्ना लेकर

---

१. बाग़ से २. टूटे पंखों वाला ३. निर्बल पक्षी पर ४. पहाड़ों और जंगलों के पक्षियों से ५. ऐसे जंगल में जहां हर चीज़ खो जाती है ६. वह कल्पित पक्षी जो जिस किसीके सिर पर से गुज़र जाए, वह बादशाह बन जाता है ७. हृदय-रूपी पक्षी ८. आराम

दम ज़ो'फ़ से[1] उलटता है आकर दहन[2] के पास
फिर जाए है पहुंच के मुसाफ़िर वतन के पास

मैं तो इसी झिझक पे फ़िदा[3] हूं कि कान को
शब[4] क्या हटा लिया मिरे लाकर दहन के पास

इस आरज़ू में ख़ाक हुआ हूं कि बन के जाम[5]
पहुंचूं कभी लबे - बुते - पैमां - शिकन के पास[6]

ऐ 'ज़ौक़' सदक़े जाइए पैके - ख़याल के[7]
क्या दम में ले गया है बुते - सीम - तन के पास[8]

○

मुझमें क्या बाक़ी है जो देखे है तू आन के पास
बदगुमां, वहम की दारू नहीं लुक़मान के पास

---

१. दुर्बलता से २. मुंह ३. क़ुर्बान ४. रात ५. शराब का प्याला ६. वायदा न निभाने वाले प्रियतम के होंठों के पास ७. कल्पना-रूपी तीर के ८. चांदी के बदन ऐसी सुन्दरी के पास

पर कतरने को जो सैयाद ने[1] चाही मिक़राज़[2]
हाथ मलती थी मिरे हाल पे क्या ही मिक़राज़

क्या ज़बां चलती है इस बज़्म में बदगोयों की[3]
उनके मुंह में ये ज़बां है कि इलाही ! मिक़राज़

महज़रे - खून[4] मिरा तूने कतरकर फेंका
देगी इस ज़ुल्म की महशर में[5] गवाही, मिक़राज़

रिश्ता - ए - उम्र किया क़त्अ़[6] सरासर ऐ 'ज़ौक़'
खो सकी शम्अ़ के दिल की न सियाही मिक़राज़

---

१. शिकारी ने २. कैंची ३. निन्दा करने वालों की ४. हत्या का अभियोग-पत्र ५. प्रलय-क्षेत्र में ६. विच्छेद

न इससे अम्न में ईमां रहा, न दीं[1] रहा महफ़ूज़[2]
तेरी निगाह से काफ़िर[3] ! रखे ख़ुदा महफ़ूज़

कहां दिमाग़ रखें फ़िक्रे - चारासाज़ी - ए - दिल[4]
कि दाग़ लाला का[5], मरहम से है सदा महफ़ूज़

कहे है जिसको सबा[6], है वो एक बादी[7] चोर
चमन में ये ज़रे - गुल[8], रहवे ता - कुजा[9] महफ़ूज़

उलझते पाक - नफ़स[10] कब हैं नाक़िसों के[11] साथ
ख़लिश से[12] ख़ार की[13] है दामने - सबा[14] महफ़ूज़

---

१. धर्म २. सुरक्षित ३. माशूक़ ४. प्रेमोन्मत्त दिल के इलाज की चिन्ता ५. लाल रंग के एक फूल का ६. प्रभात-समीर ७. हवाई ८. पुष्प-रूपी धन ९. कब तक १०. पवित्र हृदय व्यक्ति ११. खोटे लोगों के १२. चुभन १३. कांटे की १४. प्रभात-समीर का दामन

जो खुलकर उनका जूड़ा, बाल आएं सर से पांवों तक
बलाएं आके लें सौ - सौ बलाएं सर से पांवों तक

सरापा[1] शौक़ जाएं सर के बल हम जिनके जलसे में
मिसाले - शम्अ़[2] वो हमको जलाएं सर से पांवों तक

ये जितने सर्व[3] हैं सब उसके क़द पर ज़ह्र खाते हैं
चमन में सब्ज़ क्योंकर हो न जाएं सर से पांवों तक

बनाया इसलिए इस खाक के पुतले को था इन्सां
कि इसको दर्द का पुतला बनाएं सर से पांवों तक

सरापा पाक[4] हैं धोए जिन्होंने हाथ दुनिया से
नहीं हाजत[5] कि वो पानी बहाएं सर से पांवों तक

मज़ा उतना ही 'ज़ौक़' अफ़ज़ूं[6] हो जितने ज़ख्म अफ़ज़ूं हों
न क्यों हम ज़ख्मे-तेग़े-इश्क़[7] खाएं सर से पांवों तक

---

१. सिरसे पैर तक, साकार २. दीपक की तरह ३. सरू नामक लम्बा वृक्ष ४. पवित्र ५. ज़रूरत ६. अधिक ७. इश्क़-रूपी तलवार के घाव

फंसे न हल्क़ा - ए - गेसू - ए - ताबदार में[1] दिल
बला से गर हो निवाला दहाने - मार में[2] दिल

अगर न जब्र करूं इख्तियार ऐ नासेह[3]
तो क्या करूं कि नहीं मेरे इख्तियार में दिल

ख़ुदा बचाए मुझे इस बग़ल के दुश्मन से
कि मेरा दुश्मने - जां है मिरे किनार में[4] दिल

फ़लक के[5] रंग से ज़ाहिर हैं मातमी आसार[6]
खुश अपना क्योंकि हो इस नीलगूं हिसार में[7] दिल

उठा तो लाए मुझे मेरे हमनशीं[8] ऐ 'ज़ौक़'
रहेगा मेरे इवज़ मेरा कू - ए - यार में[9] दिल

---

१. चमकीले केशों के छल्लों में २. सांप के मुंह में ३. धर्मोपदेशक ४. बग़ल में ५. आकाश के ६. लक्षण ७. नीली परिधि में ८. साथी ९. प्रियतम की गली में

पाबंद जूं दुखां[1] हैं परेशानियों में हम
यारब ! है किसकी ज़ुल्फ़ के ज़िन्दानियों में[2] हम

पाकोबियों को[3] मुज़दा[4] हो ज़िन्दान को नवेद[5]
फिर हैं जुनूं के[6] सिलसिला - जुंबानियों में[7] हम

मतलब से अपने कौन है आगाह जुज़[8] ख़ुदा
जूं ख़त्ते - सरनविश्त[9] हैं पेशानियों में[10] हम

हैं आइने में सूरते - तस्वीरे - आइना[11]
आइना - रू के[12] सामने हैरानियों में हम

क्या जानें हम ज़माने को हादिस[13] है या क़दीम[14]
कुछ हो बला से अपनी कि हैं फ़ानियों में[15] हम

जा सकते ज़ो'फ़ से[16] नहीं कूचे में उसके 'ज़ौक़'
बह जाएं काश गिरिया की[17] तुग़्यानियों में[18] हम

---

१. धुआं २. क़ैदियों में ३. पैर पटकने को ४. शुभ समाचार ५. क़ैदख़ाने को शुभ सूचना ६. उन्माद के ७. छेड़ने वालों में ८. सिवा ९. भाग्य का लिखा १०. माथों में ११. आइने के प्रतिबिम्ब की तरह १२. आइने के प्रतिबिम्ब के १३. नया १४. पुराना १५. नश्वरों में १६. दुर्बलता से १७. रोने की १८. बाढ़ों में

अंक़ा की[1] तरह ख़ल्क़ से[2] उज़लत-गज़ीं[3] हूं मैं
हूं इस तरह जहां में कि गोया नहीं हूं मैं

उस दर पे[4] शौक़े-सिजदा से[5] फ़र्शे-ज़मीं[6] हूं मैं
मानिन्दे-साया[7] सर से क़दम तक जबीं[8] हूं मैं

जो मैं नहीं कि तुम हो कहीं और कहीं हूं मैं
मैं हूं तुम्हारा साया, जहां तुम वहीं हूं मैं

हूं ताइरे-खयाल[9], न पर हैं, न मेरे बाल
पर, उड़ के जा पहुंचता कहीं से कहीं हूं मैं

देता है पेच क्यों मुझे इस दर्जा ऐ फ़लक[10]
ने[11] चीने-ज़ुल्फ़[12], ने शिकने-आस्तीं[13] हूं मैं

---

१. उस कल्पित पक्षी की तरह जो जिसके सिर पर से गुज़र जाता है, वह बादशाह बन जाता है २. जनता से ३. एकान्तप्रिय ४. दरवाज़े पर ५. सिर झुकाने के शौक़ से ६. धरती पर लेटा हुआ ७. छाया की तरह ८. माथा ९. विचार-रूपी पक्षी १०. आकाश, भगवान ११. न तो १२. केशों के बल १३. आस्तीन की सलवटें

ख़ुर्शीद - वार[1] देखते हैं सबको एक आंख
रौशन - ज़मीर[2] मिलते हर इक नेक - ओ - बद से हैं

हरचन्द[3] नातुवां[4] हैं मगर रखते हैं दिल क़वी[5]
हम इश्क़ की कुमुक से[6], जुनूं की[7] मदद से हैं

दिल के वरक़ पे सब्त हैं[8] सद - मोहरे - दाग़े - इश्क़[9]
हम करते 'ज़ौक़' इश्क़ का दावा सनद से हैं

○

जीते जी क्या मुल्के-फ़ना में[10] साथ बशर के[11] झगड़े हैं
मर कि इधर से जब कि छूटे तो जाकर उधर के झगड़े हैं

कैसा मोमिन[12], कैसा काफ़िर, कौन है सूफ़ी क्या है रिन्द[13]
सारे बशर हैं बन्दे हक़ के[14], सारे शर के[15] झगड़े हैं

ग़म कहता है दिल में रहूं मैं, जल्वा-ए-जानां[16] कहता है मैं
किसको निकालूं किसको रखूं ये तो घर के झगड़े हैं

---

१. सूरज की तरह २. ज्ञानी ३. यद्यपि ४. निर्बल ५. मज़बूत ६. सहायता से ७. उन्माद की ८. अंकित ९. इश्क़ की मोहरों के सैकड़ों चिह्न १०. नश्वर संसार में ११. मनुष्य के १२. धार्मिक मुसलमान १३. शराबी १४. खुदा या सत्य के १५. पाप के १६. प्रिय-दर्शन

वक़्ते - पीरी[1] शबाब की[2] बातें
ऐसी हैं जैसे ख्वाब की बातें

फिर मुझे ले चला उधर देखो
दिले - ख़ाना - ख़राब की बातें

सुनते हैं उसको छेड़ - छेड़ के हम
किस मज़े से इताब[3] की बातें

मुझको रुसवा करेंगी खूब ऐ दिल
ये तिरी इज़्तिराब की[4] बातें

देख ऐ दिल न छेड़ क़िस्सा-ए-ज़ुल्फ़
कि ये हैं पेचो - ताब की बातें

ज़िक्र क्या जोशे - इश्क़ में ऐ 'ज़ौक़'
हमसे हों सब्रो - ताब की[5] बातें

---

१. बुढ़ापे में २. जवानी की ३. रोष, कोप ४. आतुरता की
५. सहनशीलता की

इस गुलिस्ताने - जहां में[1] क्या गुले - इश्रत[2] नहीं
सैर के क़ाबिल है ये पर सैर की फ़ुरसत नहीं

कहते हैं, मर जाएं, गर छुट जाएं ग़म के हाथ से
पर तिरे ग़म से हमें मरने की भी फ़ुरसत नहीं

दिल वो क्या जिसको नहीं तेरी तमन्ना-ए-विसाल[3]
चश्म[4] वो क्या जिसको तेरी दीद की[5] हसरत नहीं

ख़ाक होकर भी फ़लक के[6] हाथ से हमको क़रार[7]
एक साअ़त[8] मिस्ले - रेगे - शीशा - ए - साअ़त[9] नहीं

'ज़ौक़' इस सूरत - कदे में[10] हैं हज़ारों सूरतें
कोई सूरत अपने सूरत - गर की[11] बे - सूरत नहीं

---

१. संसार-रूपी बाग़ में २. ऐश्वर्य-रूपी फूल ३. मिलन की आकांक्षा ४. आंख ५. दर्शन की ६. आकाश (भाग्य) के ७. चैन ८. क्षण ९. शीशे की रेत घड़ी की रेत की तरह १०. शक्लों के घर अर्थात् संसार में ११. भगवान की

गुज़रती उम्र है यूं दौरे - आस्मानी में[1]
कि जैसे जाए कोई कश्ती - ए - दुख़ानी में[2]

रुकाव ख़ूब[3] नहीं तबअ़ की[4] रवानी में
कि बू फ़साद की[5] आती है बंद पानी में

वो अपने घर को सिधारे और उनकी खोज में हम
फिरे भटकते हुए कू - ए - बदगुमानी में[6]

हमेशा है मुझे सरमाया-ए-फ़ना में[7] बक़ा[8]
हुबाब - वार हूं[9] मैं आबे - ज़िन्दगानी में[10]

कहूं मैं अपनी कहानी तो वो ये कहते हैं
बग़ैर झूठ नहीं और कुछ कहानी में

---

१. कालचक्र में २. भाप से चलने वाले जल-यान में ३. उचित ४. विचार या कल्पना की ५. विकार की ६. बुरी धारणा-रूपी गली में ७. मृत्यु-रूपी पूंजी में ८. अस्तित्व, हस्ती ९, बुलबुले की तरह हूं १०. जीवन-रूपी जल में

वो देखें बज़्म में[1] पहले किधर को देखते हैं
मोहब्बत ! आज तिरे हम असर को देखते हैं

हम उनके कोठे पे चढ़ के हैं ढूंडते महे-ईद[2]
किधर को चांद है, और हम किधर को देखते हैं

जहां के आइनों से दिल का है आइना जुदा
इस आइना, में हम आइना-गर को[3] देखते हैं

बना के आइना, देखे है पहले आइना-गर
हुनर-वर[4] अपने ही ऐबो-हुनर को[5] देखते हैं

अयार[6] नक़्दे-मोहब्बत का[7] देख सख़्ती पर
लगा के 'ज़ौक़' कसौटी पे ज़र को[8] देखते हैं

१. महफ़िल में २. ईद का चांद ३. भगवान को ४. गुणी ५. गुण-दोषों को ६. कसावट, बानगी ७. प्रेम-रूपी धन का ८. सोने को

वो दिन है कौन-सा कि सितम पर सितम नहीं
गर ये सितम है रोज़ तो इक रोज़ हम नहीं

ये दिल मुझे डुबो के रहेगा, कि सीने में
वो कौन सा है दाग़ जो गिर्दाबे-ग़म[1] नहीं

अहले-सफ़ा का[2] देखा न दामन किसी ने तर
गौहर[3] है अपनी आब में ग़र्क़ और नम नहीं

गर आबे-दीद[4] शरबते-कौसर[5] भी है तो क्या
जब तक कि उसमें चाशनी-ए-दर्दो-ग़म[6] नहीं

जाता है आंखें बंद किए 'ज़ौक़' तू कहां
ये राहे-कू-ए-यार[7] है राहे-अदम[8] नहीं

---

१. ग़म का भंवर २. निष्कपट लोगों का ३. मोती ४. आंसू ५. जन्नत की शराब ६. पीड़ा और दुःख की मिलावट ७. प्रियतम की गली का रास्ता ८. मृत्यु का रास्ता

ग्राज उनसे मुद्दई[1] कुछ मुद्दग्रा कहने को हैं
पर नहीं मालूम क्या कहवेंगे क्या कहने को हैं

मैं तिरे हाथों के क़ुर्बां, वाह क्या मारे हैं तीर
सब दहाने - ज़ख़्म[2] मुंह से मरहबा[3] कहने को हैं

देखे ग्राइने बहुत, बिन ख़ाक हैं नासाफ़ सब
हैं कहां ग्रहले - सफ़ा[4], अहले - सफ़ा कहने को हैं

वो जनाज़े पर मिरे किस वक़्त ग्राए देखना
जब कि 'इज़्ने - आम'[5] मेरे ग्रक़रबा[6] कहने को हैं

देख ले पहुंचे किस ग्रालम से[7] किस ग्रालम में हैं
नाला - हाए - दिल[8] हमारे नारसा[9] कहने को हैं

बेसबब सूफ़ार[10] उनके मुंह नहीं खोले हैं 'ज़ौक़'
ग्राए पैके - मर्ग[11] पैग़ामे - क़ज़ा[12] कहने को हैं

---

१. प्रतिद्वन्द्वी २. घावों के मुंह ३. शाबाश ४. निष्कपट व्यक्ति
५. हर किसीको देखने की ग्रनुमति ६. सम्बन्धी ७. स्थिति से
८. दिल का विलाप ९. लक्ष्य पर न पहुंचने वाले १०. तीर के मुंह
११. मृत्यु-दूत १२. मृत्यु-सन्देश

हां, ताम्मुल[1] दमे-नावक-फ़िगनी[2] खूब नहीं
अभी छाती मिरी तीरों से छनी खूब नहीं

गुल[3] परेशान हुआ, हंस के चमन में आखिर
देख ऐ गुञ्चे[4] ! यहां खंदाज़नी[5] खूब नहीं

खूबियां यूं तो हैं इस आलमे-तस्वीर में[6] सब
इक मगर नाज़ से ये कम-सुखनी[7] खूब नहीं

चश्म[8] कहती है तिरी जुंबिशे-मिज़गां से[9] कि देख
सर पे बीमार के ये सीना-ज़नी खूब[10] नहीं

बात तो खूब बनाई थी वहां हमने मगर
थी जो बिगड़ी हुई तक़दीर, बनी खूब नहीं

ये नहीं शीशा-ए-मय[11], है किसी मैख्वार का[12] दिल
मोहतसिब[13] ! देख, न कर दिल-शिकनी[14], खूब नहीं

---

१. विलम्ब २. तीरंदाजी के समय ३. फूल ४. कली ५. हंसना ६. संसार में ७. कम बोलना ८. आंख ९. पलकों के हिलने से १०. छाती पीटना ११. शराब की बोतल १२. शराबी का १३. रसाध्यक्ष १४. दिल न तोड़

करे वह्शत[1] बयां चश्मे - सुख़नगो[2] इसको कहते हैं
ये सच कहते हैं सर चढ़ बोले जादू इसको कहते हैं

गवारा तल्ख़ी-ए -मय[3] क्यों न हो हम खस्ता-जानों को[4]
कि दारू तल्ख ही बेहतर है, दारू इसको कहते हैं

जो पूछे अक़्ल ये दिल से बता क्या नाम है तेरा
कहो दीवाना - ए - चश्मे - परीरू[5] इसको कहते हैं

खिंची शीरीं न दिल से, कोहकन ने[6] कोह को[7] काटा
मोहब्बत ये नहीं है, ज़ोरे - बाज़ू इसको कहते हैं

अजल[8] सौ बार आई 'ज़ौक़' पर जब तक न वो आए
न पाया दम निकलने मेरा, क़ाबू इसको कहते हैं

---

१. उपेक्षा, त्रास २. बोलती आंख ३. शराब की कड़वाहट ४. बीमार आशिक़ों को ५. परी ऐसी सुन्दर प्रेमिका की आंखों का दीवाना ६. फ़रहाद ने ७. पहाड़ को ८. मृत्यु

तू कहे ग़ुन्चा[1] कि उस लब पर धड़ी[2] ख़ूब नहीं
चुप कि मुंह छोटा-सा और बात बड़ी ख़ूब नहीं

सामने से मिरे टलता नहीं नासेह[3] जब तक
मग़ज़ खाता मिरा दो - चार घड़ी, ख़ूब नहीं

फ़ित्ना सरकश है[4] जभी तक कि तिरी आंखों ने
दस्ते - मिज़गां से[5] कोई धौल जड़ी, ख़ूब नहीं

मुंह चढ़े तेग़े - ग़मे - इश्क़ के[6], क्या मुंह है तिरा
बुलहवस[7] ! तुझ पे कोई ज़र्ब[8] पड़ी ख़ूब नहीं

ख़ूबरुओं से[9] बहुत आंख लड़ी पर अफ़सोस
क़िस्मत ऐ 'ज़ौक़' कहीं अपनी लड़ी ख़ूब नहीं

---

१. कली २. होंठों पर पान का रंग ३. धर्मोपदेशक ४. उपद्रव भड़का हुआ है ५. पलकों-रूपी हाथ से ६. इश्क़ के ग़म की तलवार के ७. लोभी ८. चोट ९. सुन्दरियों से

गई यारों से वो अगली मुलाक़ातों की सब रस्में
पड़ा जिस दिन से दिल बस में तिरे और दिल के हम बस में

कभी मिलना, कभी रहना अलग मानिन्दे-मिज़गां[1] के
तमाशा कज-सिरिश्तों का[2] है ये इख़्लास[3] आपस में

मुझे हो किस तरह क़ौलो-क़सम का एतिबार उनके
हज़ारों दे चुके वो क़ौल[4], लाखों खा चुके क़समें

○

सीना-ओ-दिल पे मिरे जख़्मे-जिगर हंसते हैं
हंसने दो चारागरो[5], हंसते ही घर बसते हैं

○

कमंदें और भी यूं तो कमंद-अंदाज़[6] रखते हैं
तिरी ज़ुल्फ़ों के ख़म[7] कुछ और ही अंदाज़ रखते हैं

---

१. पल कों की तरह २. दुष्ट प्रकृति वालों का ३. मैत्री, निःस्वार्थता ४. वचन ५. चिकित्सको ६. कमंद फेंकने वाले ७. पेच

तेरे आफ़त - ज़दा[1] जिन दश्तों में[2] अड़ जाते हैं
सब्रो - ताक़त के वहां पांव उखड़ जाते हैं

इतने बिगड़े हैं वो मुझसे कि अगर नाम उनके
ख़त भी लिखता हूं तो सब हर्फ़ बिगड़ जाते हैं

क्यों न लड़वाएं उन्हें ग़ैर कि करते हैं यहीं
हमनशीं[3] ! जिनके नसीबे[4] कहीं लड़ जाते हैं

○

यां लब पे[5] लाख - लाख सुख़न[6] इज़्तिराब में[7]
वां एक ख़ामुशी, तिरी सब के जवाब में

ख़त देखकर वो आए बहुत पेचो - ताब में
क्या जाने लिख दिया उन्हें क्या इज़्तिराब में

---

१. मुसीबत के मारे २. जंगलों में ३. साथी ४. भाग्य ५. होंठों पर ६. बातें ७. व्याकुलता में

बे-यार[1] रोज़े - ईद[2], शबे - ग़म से[3] कम नहीं
जामे - शराब[4], दीदा - ए - पुरनम से[5] कम नहीं

देता है दौरे-चर्ख़[6] किसे फ़ुर्सते-निशात[7]
है जिसके पास जाम, वो अब जम से[8] कम नहीं

ज़ेबा[9] है रू-ए-ज़र्द पे[10] क्या अश्के-लाला-गूं[11]
अपनी ख़िज़ां, बहार के मौसम से कम नहीं

साक़ी ! मिले हज़ार अफ़लातूं[12] हैं खाक में
जो ख़ुम[13] तही है[14], क़ालिबे-आदम से[15] कम नहीं

समझूं ग़नीमत इस दमे-ख़ंजर को क्यों न मैं
इस बेकसी में ये मुझे हमदम से कम नहीं

ऐ 'ज़ौक़' किसको चश्मे-हिक़ारत से[16] देखिए
सब हम से हैं ज्यादा, कोई हम से कम नहीं

---

१. प्रियतम के बिना २. ईद (ख़ुशी) का दिन ३. जुदाई की रात ४. शराब का प्याला ५. सजल आंख से ६. आकाश या काल चक्र ७. आनन्द का अवकाश ८. जमशेद बादशाह ९. सुशोभित १०. पीले मुखड़े पर ११. गुलाबी आंसू १२. एक दार्शनिक का नाम १३. शराब का मटका १४. ख़ाली है १५. मानव-हृदय १६. घृणा की दृष्टि से

मुश्किल है मेरे अहदे-मोहब्बत का[1] टूटना
ऐ बेवफ़ा! ये तेरी वफ़ा की क़सम नहीं

वहशी को तेरे, दश्त[2] भी है अर्सा-ए-बहिश्त[3]
अब कोई शाख़, शाख़ से तूबा की[4] कम नहीं

दुनिया में तर हो दामने-अहले-सफ़ा[5] कहां
हरचंद गौहर[6] आब में[7] है ग़र्क़, नम नहीं

जाता है बंद आंखें किए 'ज़ौक़' क्या कि देख
ये राहे-कू-ए-यार[8] है, कू-ए-अदम[9] नहीं

○

जिस जगह बैठे हैं बा-दीदा-ए-नम[10] उट्ठे हैं
आज किस शख़्स का मुंह देख के हम उट्ठे हैं

---

१. प्रेम-प्रतिज्ञा का २. जंगल ३. स्वर्ग का मैदान ४. स्वर्ग के एक फलदार पेड़ की शाख़ा से ५. पवित्र हृदय व्यक्तियों का दामन ६. मोती ७. पानी में ८. प्रियतम की गली ९. यमलोक की गली या मार्ग १०. सजल नेत्रोंसहित

दूदे-दिल से[1] है ये तारीकी मिरे ग़मखाने में[2]
शम्अ़ है इक सोज़ने-गुमगश्ता[3] इस काशाने में[4]

मैं हूं वो ख़िश्ते-कुहन[5] मुद्दत से इस वीराने में
बरसों मस्जिद में रहा, बरसों रहा मैख़ाने में

वहशतो - नाआशनाई[6], मस्ती - ओ - बेगानगी
या तिरी आंखों में देखी या तिरे दीवाने में

एक पत्थर पूजने को शैख़ जी का’बे गए
‘ज़ौक़’ हर बुत क़ाबिले-बोसा[7] है इस बुतख़ाने में[8]

○

मर गए पर भी तग़ाफ़ुल[9] ही रहा आने में
बेवफ़ा पूछे है, क्या देर है ले जाने में

---

१. दिल के धुएं से २. शोक-घर में ३. खोई हुई सुई ४. घर में ५. पुराने पत्थर का टुकड़ा ६. उपेक्षा तथा अलगाव ७. चूमने योग्य ८. संसार में ६. उपेक्षा, आलस्य

बलाएं आंखों से उनकी मुदाम[1] लेते हैं
हम अपने हाथों का मिज़गां से[2] काम लेते हैं

शबे-विसाल के[3], रोज़े-फ़िराक़ में[4] क्या-क्या
नसीब मुझसे मिरे इंतिक़ाम लेते हैं

झुकाए है सरे-तसलीम[5] माहे-नौ पर[6] वो
ग़रूरे-हुस्न से किसका सलाम लेते हैं

हमारे हाथ से ऐ 'ज़ौक़' वक़्ते-मयनोशी[7]
हज़ार नाज़ से वो एक जाम लेते हैं

○

नहीं तद्बीर कुछ बनती पड़े सर को पटकते हैं
न दिल छोड़े है हमको और न हम दिल छोड़ सकते हैं

---

१. हमेशा २. पलकों से ३. मिलन की रात के ४. जुदाई के दिन में ५. स्वीकृति में सिर ६. नये चांद पर ७. मदिरापान के समय

तू नगीं[1] तोड़ न दिल का कि बड़ी काविश से[2]
इस्मको[3] मैंने तिरे कंदा[4] किया है इसमें

दे चुके इश्क़ में जां वामिक़-ओ-क़ैस-ओ-फ़रहाद[5]
और अभी देखिए किस-किसकी क़ज़ा[6] है इसमें

शीशा-ए-सब्ज़े-फ़लक से[7] न तलब कर मए-ऐश[8]
मय कहां इसमें है, ज़हराब[9] भरा है इसमें

क्या बगूले की तरह खाक का पुतला इन्सां
उड़ता फिरता है, भरी जब से हवा है इसमें

O

हुआ है और न होवेगा कोई पैदा खुदाई में
वफ़ा में कोई मुझ-सा और तुम-सा बेवफ़ाई में

---

१. नगीना २. परिश्रम से ३. नाम को ४. अंकित ५. तीन प्रसिद्ध आशिक़ों के नाम ६. मृत्यु ७. निखरे हुए आकाश-रूपी मदिरापात्र से ८. आनन्ददायक मदिरा ९. विष-जल

आस्मां और वो इन्सान बनाना हमको
ख़ाक में था मगर इस ढब से मिलाना हमको

इस पे मरते हैं कि क्यों ग़ैर को तूने मारा
वो नसीब उसको हुई, थी जो तमन्ना हमको

हम हैं वो गर्म-रवे-राहे-फ़ना[1] जूं ख़ुर्शीद[2]
साया तक भाग गया छोड़ के तन्हा हमको

देखा आख़िर को न फोड़े की तरह फूट बहे
हम भरे बैठे थे, क्यों आपने छेड़ा हमको

तू हंसी से ये न कह मरते हैं हम भी तुझ पर
मार ही डालेगा बस रश्क[3] हमारा हमको

दिल में नश्तर निगहे-यार का[4] था ही खटका
वही पेश आया जो मुद्दत से था खटका हमको

'ज़ौक़'! बाज़ीगहे-तिफ्लां[5] है सरासर ये ज़मीं
साथ लड़कों के पड़ा खेलना गोया हमको

---

१. मृत्यु-मार्ग पर अग्रसर २. सूरज ३. ईर्ष्या ४. प्रियतम की नज़र का ५. बच्चों के खेलने का स्थान

अज़ीज़ो, इसको न घड़ियाल की सदा[1] समझो
ये उम्रे-रफ़्ता की[2] अपनी सदा-ए-पा[3] समझो

बजा कहे जिसे आलम[4] उसे बजा समझो
ज़बाने-खल्क को[5] नक्क़ारा-ए-खुदा[6] समझो

न समझो दश्त[7] शिफ़ाखाना-ए-जुनूं[8] है ये
जो खाक-सी भी पड़े फांकनी दवा समझो

तुम्हारी राह में मिलते हैं खाक में लाखों
इस आरज़ू में कि तुम अपना खाके-पा समझो

समझ है और तुम्हारी, कहूं मैं तुमसे क्या
तुम अपने दिल में खुदा जाने सुन के क्या समझो

तुम्हें है नाम से क्या काम, मिस्ले-आइना[9]
जो रू-ब-रू हो उसे सूरत-आशना समझो

नहीं है कम ज़रे-खालिस से[10] ज़र्दी-ए-रुख़सार[11]
तुम अपने इश्क़ को ऐ 'ज़ौक़' कीमिया[12] समझो

---

१. आवाज़ २. बीती आयु की ३. पांव की आवाज़ ४. संसार ५. जनता की आवाज़ को ६. खुदा की ओर से बजाया गया डंका ७. जंगल ८. उन्माद का चिकित्सालय ९. आइने की तरह १०. शुद्ध सोने से ११. गालों का पीलापन १२. वह विधि जिससे तांबे को सोना बनाते हैं, रसायन

दाना ख़िरमन[1] है हमें, क़तरा है दरिया हमको
आए है जुज़ में[2] नज़र कुल का तमाशा हमको

किससे तद्बीर दुरुस्ती हो हमारी जूं ज़ुल्फ़
कि शिकस्तों से बनाया है सरापा[3] हमको

आन पहुंची सरे-गिर्दाबे-फ़ना[4] कश्ती-ए-उम्र[5]
हर नफ़स[6] बादे-मुख़ालिफ़ का[7] है झोंका हमको

हम वो मजनूं हैं कि गर रम करें[8] आहू की[9] तरह
भागे है दूर ही से देख के सहरा[10] हमको

हम न कहते थे कि 'ज़ौक़' उसकी तू ज़ुल्फ़ों को न छेड़
अब वो बरहम[11] है तो है तुझको क़लक़[12] या हमको

---

१. खलियान २. इकाई पर ३. सिर से पांव तक ४. मृत्यु-रूपी भंवर के पास ५. आयु-रूपी नाव ६. सांस ७. विपरीत दिशा में चलने वाली हवा ८. भागें ९. हिरन की १०. मरुस्थल ११. नाराज़ १२. अफ़सोस

तमन्ना नहीं है कि इमदादे - दिल को[1],
तपिश का सिला[2] हो कि मुज़्दे-क़लक़[3] हो।

यही हक़ है, क़ातिल अगर हक़ दिलाए,
ये बिस्मिल[4] तिरे पांव पर जां-बहक़ हो[5]॥

किताबे - मोहब्बत में ऐ हज़रते - दिल,
बताओ कि तुम लेते कितना सबक़ हो।

कि जब आन कर तुमको देखा तो वो ही,
लिए दस्ते-अफ़सोस के[6] दो वरक़ हो॥

मिरी ज़िन्दगी थी अभी ऐ सितमगर[7],
मसीहाई[8] जो कर गई तेरी ठोकर।

कि ठुकराया तूने तो था यूं समझकर,
निकल जाए जां कुछ जो सद्दे-रमक़[9] हो॥

---

१. दिल की सहायता को २. फल ३. दुःख-रूपी शुभ सूचना ४. घायल ५. जान दे ६. अफ़सोस में मले जाने वाले हाथों के ७. अत्याचारी (प्रियतम) ८. इलाज ९. जान निकलने में बाधा

दिन कटा, जाइए अब रात किधर काटने को
जब से वो घर में नहीं, दौड़े है घर काटने को

हाए सैयाद[1] तो आया मिरे पर काटने को
मैं तो ख़ुश था कि छुरी लाया है सर काटने को

अपने आशिक़ को न खिलवाओ कनी हीरे की
उसके आंसू ही किफ़ायत[2] हैं जिगर काटने को

वो शजर[3] हूं न गुलो-बार[4] न साया मुझमें
बाग़बां ने[5] लगा रक्खा है मगर काटने को

शाम ही से दिले-बेताब का है 'ज़ौक़' ये हाल
है अभी रात पड़ी चार पहर काटने को

---

१. शिकारी २. काफ़ी ३. पेड़ ४. फूल-फल ५. माली ने

सगे-दुनिया[1] पस-अज़-मुर्दन[2] भी दामनगीरे-दुनिया हो
कि उस कुत्ते की मिट्टी से भी कुत्ता-घास पैदा हो

मिटे सहरा में वो वहशत बरसती है कि मजनूं के
गिरे गर सर पे क़तरा आबला ज़ेरे-कफ़े-पा[3] हो

कहें क्या दिल की वुसअ़त[4], अपनी हम अल्लाह रे वुसअ़त
अगर नौ आस्मां हों जमअ़ इक खाले-सुवैदा[5] हो

अकेला रह गया यारों से हूं यूं नातुवानी में[6]
कहीं शाखे-खिज़ां-दीदा पे[7] जैसे ज़र्द पत्ता हो

जो ज़िक्र अल्लाह का हो 'ज़ौक़' मानअ़[8], माया-ए-इश्रत[9]
तो क्यों हक़-हक़[10] करे वो शीशा[11] जिस शीशे में सहबा[12] हो

---

१. दुनिया का कुत्ता अर्थात् लोलुप व्यक्ति २. मरने के बाद
३. पांव के तलवे में ४. विशालता ५. दिल पर का काला बिन्दु
६. दुर्बलता में ७. पतझड़ की मारी शाखा पर ८. रोकने वाला
९. भोग-विलास १०. ख़ुदा-ख़ुदा ११. बोतल १२. शराब

रिन्दे-ख़राब हाल को[1] ज़ाहिद[2] ! न छेड़ तू
तुझको पराई क्या पड़ी अपनी निबेड़ तू

उम्रे-रवां का[3] तौसने-चालाक[4] इसलिए
तुझको दिया था यां से करे जल्द एड़ तू

ये तंगनाए-दहर[5], नहीं मंज़िले-फ़राग़[6]
ग़ाफ़िल न पांव हिर्स के फैला सुकेड़ तू

आवारगी से कू-ए-मोहब्बत की[7] हाथ उठा
ऐ 'ज़ौक़' ! ये उठा न सकेगा खखेड़[8] तू

○

जितना है नमक सब मिरे ज़ख़्मों में खपाओ
पलकों से उठाओगे, न हाथों से गिराओ

---

१. बदमस्त शराबी को २. विरक्त ३. व्यतीत होती आयु का ४. तेज रफ़्तार घोड़ा ५. छोटा-सा संसार ६. आराम की जगह ७. प्रेम-गली की ८. झंझट

८८७

हरम को[1] जाए ज़ाहिद[2], हम तो मैख़ाने को चलते हैं
मुबारिक उसको तौफ़े-का'बा[3], हमको दौरे-साग़र हो[4]

मुझे सहने-चमन[5] भी, अर्सा-गाहे-हश्र[6] हो तुझ बिन
गुले - ख़ुर्शीद[7] मेरे वास्ते ख़ुर्शीदे - महशर[8] हो

जो खोए आपको, वो मंज़िले-मक़सूद को[9] पहुँचे
तिरी गुम-गशतगी[10], इस राह में ऐ 'ज़ौक़' रहबर[11] हो

O

क़ालिबे - ख़ाकी - ए - इन्सां को[12] बना कर कच्चा
इश्क़ की आग में डाला कि पकावे उसको

मुश्ते-ख़ाक अपनी कल उस कूचे में हम फैंक आए
अब वो 'ज़ौक़' आप उठावे न उठावे उसको

---

१. मस्जिद को २. विरक्त, पारसा ३. का'बे की परिक्रमा ४. शराब के प्याले का दौर या चक्र ५. वाटिका-आंगन ६. प्रलय-क्षेत्र ७. सूर्यमुखी फूल ८. प्रलय का सूर्य ९. अभीष्ट स्थान १०. खो जाना ११. पथ-प्रदर्शक १२. मिट्टी से बने मानव-हृदय की

मरते हैं तिरे प्यार से हम और ज़ियादा
तू लुत्फ़ में[1] करता है सितम[2] और ज़ियादा

दें क्यों न वो दाग़े-अलम[3] और ज़ियादा
क़ीमत में बढ़े दिल के दिरम[4] और ज़ियादा

क्या होवेगा दो-चार क़दह से[5] मुझे साक़ी
मैं लूंगा तिरे सर की क़सम और ज़ियादा

लेते हैं समर[6], शाखे-समरवर को[7] झुकाकर
झुकते हैं सख़ी वक़्ते-करम[8] और ज़ियादा

चालीस क़दम साथ वो ताबूत के[9] आए
क्या हो जो बढ़ें चंद क़दम और ज़ियादा

क्यों मैंने कहा, तुझ-सा ख़ुदाई में नहीं और
मग़रूर हुआ अब वो सनम[10] और ज़ियादा

जो कुंजे-क़नाअ़त में[11] है तक़्दीर पे शाकिर[12]
है 'ज़ौक़' बराबर उन्हें कम और ज़ियादा

---

१. कृपा में २. अत्याचार ३. दुःख के दाग़ ४. मूल्य (एक पुराना सिक्का) ५. मटकों से ६. फल ७. फलदार डाली को ८. कृपा के समय ९. मुर्दे के संदूक या जनाज़े के १०. माशूक़ ११. सन्तोष-रूपी कोने में १२. सन्तुष्ट

है उनका सादापन भी तो इक बांकपन के साथ
सीधी-सी बात भी है तो क्या-क्या फबन के साथ

होशो - ख़िरद[1] गए निगहे - सहर - फ़न के[2] साथ
अब जो है अपनी बात सो दीवानेपन के साथ

अफ़सुर्दा - दिल[3] के वास्ते क्या चांदनी का लुत्फ़
लिपटा पड़ा है मुर्दा - सा गोया कफ़न के साथ

देखा न, गुल से नकहते - गुल[4] कर गई सफ़र
ख़ानाबदोश को नहीं उल्फ़त वतन के साथ

दाग़े - दिले - फ़सुर्दा पे[5] फाहा नहीं, न हो
मतलब चिराग़े - मुर्दा को कब है कफ़न के साथ

मुश्क़िल है 'ज़ौक़' क़ैदे-तअ़ल्लुक से[6] छूटना
जब तक कि रूह को है इलाक़ा[7] बदन के साथ

---

१. बुद्धि, विवेक २. जादूगर नज़रों के ३. दुखी हृदय व्यक्ति
४. फूल की सुगंध ५. दुःखों से घायल हृदय पर ६. सम्बन्ध-रूपी
क़ैद ७. सम्बन्ध

ऐ 'ज़ौक़', वक़्त नाले के[1] रख ले जिगर पे हाथ
वर्ना जिगर को रोएगा तू धर के सर पे हाथ

छोड़ा न दिल में सब्र न आराम नै[2] क़रार
तेरी निगह ने[3] साफ़ किया धर के घर पे हाथ

मैं नातुवां[4] हूं खाक का परवाने की ग़ुबार
उठता हूं रख के दोशे-नसीमे-सहर पे[5] हाथ

ऐ शम्अ, एक चोर है बादे-नसीमे-सुब्ह[6]
मारे है कोई दम में तिरे ताजे-ज़र पे[7] हाथ

ऐ 'ज़ौक़' मैं तो बैठ गया दिल को थाम कर
इस नाज़ से खड़े थे वो रख कर कमर पे हाथ

---

१. रोने के २. न ३. नज़र ने ४. कमज़ोर ५. प्रभात-समीर के कंधे पर ६. सुबह की ठण्डी हवा ७. सुनहरी ताज पर

तिरे कूचे को वो बीमारे-ग़म दारुल-शिफ़ा[1] समझे
अजल को[2] जो तबीब[3] और मर्ग को[4] अपनी दवा समझे

वही कुछ तल्ख़-काम[5] इस ज़िन्दगानी का मज़ा समझे
जो ज़ह्रे-आबे-तेगे-यार को[6] आबे-बक़ा[7] समझे

वो हम से ख़ाकसारों को जब अपनी ख़ाके-पा[8] समझे
हम अपनी ख़ाकसारी अपने हक़ में कीमिया[9] समझे

हिकायत[10] दिल की कहता हूं समझते वो शिकायत हैं
तुम्हीं समझो ज़रा दिल में कि समझे भी तो क्या समझे

समझ ही में नहीं आती है कोई बात 'ज़ौक़' उनकी
कोई जाने तो क्या जाने कोई समझे तो क्या समझे

---

१. चिकित्सालय २-४. मृत्यु को ३. चिकित्सक ५. असफल, निराश ६. प्रियतम की कटार के धार-रूपी विष ७. अमृत ८. पांव की धूल ९. रसायन १०. गाथा

फ़रोग़े-इश्क़ से[1] है रोशनी जहां के लिए
यही चिराग़ है इस तीरा[2] ख़ाकदां के[3] लिए

वबाले-दोश[4] है इस नातुवां को[5] सर लेकिन
लगा रखा है तिरे ख़ंजरो-सिनां के[6] लिए

बयाने-दर्दे-मोहब्बत जो हो तो क्योंकर हो
ज़बान दिल के लिए है, न दिल ज़बां के लिए

नहीं है ख़ानाबदोशों को हाजते-सामां[7]
असासा[8] चाहिए क्या ख़ाना-ए-कमां के लिए

अगर उमीद न हमसाया हो तो ख़ाना-ए-यास[9]
बहिश्त है हमें आरामे-जाविदां के[10] लिए

बनाया आदमी को 'ज़ौक़' एक जुज़्वे-ज़ईफ़[11]
और उस ज़ईफ़ से कुलकाम दो जहां के लिए

---

१. इश्क़ की चमक से २. अंधेरे ३. धरती के ४. कंधे के लिए मुसीबत ५. दुर्बल को ६. ख़ंजर और तीर की नोक के ७. सामान की ज़रूरत ८. सामान, सामग्री, पूंजी ९. निराशा-रूपी घर १०. स्थायी आराम के ११. दुर्बल अंग या इकाई

मज़े जो मौत के आशिक़ बयां कभू करते
मसीहो-खिज्र[1] भी मरने की आर्ज़ू करते

अगर ये जानते चुन-चुन के हम को तोड़ेंगे
तो गुल कभी न तमन्ना-ए-रंगो-बू[2] करते

समझ ये दारो-रसन[3], तारो-सोज़न[4] ऐ मंसूर[5]
कि चाके-पर्दा[6] हक़ीक़त का हैं रफ़ू करते

यक़ीं है सुब्हे-क़यामत को[7] भी सुबूही-कश[8]
उठेंगे ख्वाब से[9] साक़ी, सुबू-सुबू[10] करते

न रहती यूसुफ़े-किन्आं की[11] गर्मी-ए-बाज़ार[12]
मुक़ाबले में जो हम तुझको रू-ब-रू करते

सुराग़े-उम्रे-गुज़िश्ता का[13] ढूंडिए गर 'ज़ौक़'
तमाम उम्र गुज़र जाए जुस्तुजू करते

---

१. ईसा और खिज्र (मुर्दों को जिलाने वाले अमर पैग़म्बर) २. रंग और सुगंध की कामना ३. फांसी का तख्ता और रस्सी ४. सूई और धागा ५. मंसूर नामक आशिक़ ६. फटा हुआ पर्दा ७. प्रलय-दिवस की सुबह को ८. सुबह उठते ही शराब पीने वाले ९. नींद से १०. मटका-मटका (शराब का) ११. यूसुफ़ नामक (परम्परागत) अति सुन्दर व्यक्ति की १२. बाज़ार की चहल-पहल (श्रेष्ठता) १३. बीती आयु का सुराग़ (यह पता कि कहां गई)

लेते ही दिल जो आशिक़े-दिलसोज़ का[1] चले
तुम आग लेने आए थे क्या आए क्या चले

क्या ले चले गली से तिरी हम कि जूं नसीम[2]
आए थे सर पे ख़ाक उड़ाने, उड़ा चले

अफ़सोस है कि साया-ए-मुर्ग़े-हवा की[3] तरह
हम जिसके साथ-साथ चलें, वो जुदा चले

रोज़े-अज़ल से[4] ज़ुल्फ़े-मुअंबर का[5] है असीर[6]
क्या उड़ के तुझ से ताइरे-नकहत[7] भला चले

साथ अपने ले के तू सिन्ने-उम्रे-रवां को[8] आह
हम इस सराए-दहर में[9] क्या आए क्या चले

फ़िक्रे-क़नाअत[10] उनको मयस्सर[11] हुई कहां
दुनिया से दिल में ले के जो हिर्सो-हवा[12] चले

ऐ 'ज़ौक़', है ग़ज़ब निगहे-यार[13] अलहफ़ीज़[14]
वो क्या बचे कि जिस पे ये तीरे-क़ज़ा[15] चले

---

१. दुखी प्रेमी का २. ठंडी हवा ३. ४. आदिकाल से ५. सुगंधित केशों को ६. बन्दी ७. सुगंधि-रूपी पक्षी ८. व्यतीत होती आयु को ९. संसार-रूपी सराय में १०. तुष्टि की चिन्ता ११. प्राप्त १२. लोभ-लिप्सा १३. प्रियतम की नज़र १४. ख़ुदा बचाए १५. मृत्यु-रूपी तीर

चुप्के-चुप्के ग़म का खाना कोई हम से सीख जाए
जी ही जी में तिलमिलाना, कोई हम से सीख जाए

देख कर क़ातिल को भर लाए ख़राशे-दिल में[1] ख़ूं
सच तो है यूं मुस्कराना, कोई हम से सीख जाए

कह दो क़ासिद से[2] कि जाए कुछ बहाने से वहां
गर नहीं आता बहाना, कोई हम से सीख जाए

जब कहा मरता हूं, वो बोले मिरा सर काट कर
झूट को सच कर दिखाना, कोई हम से सीख जाए

हम ने पहले ही कहा था तू करेगा हम को क़त्ल
त्योरियों का ताड़ जाना, कोई हम से सीख जाए

क्या हुआ ऐ 'ज़ौक़' हैं जूं मर्दुमक[3] हम रू-सियाह[4]
लेकिन आंखों में समाना, कोई हम से सीख जाए

---

१. दिल की छीलन में २. पत्रवाहक ३. आंख की पुतली
४. काले मुंह वाला (पापी)

ख़बर लूं जेब की या मैं रहूं हुशियार दामन से
जुनूं में[1] उलझे नाख़ुन जेब से और ख़ार[2] दामन से

तुम्हारे जल्वा-ए-रुख़ के[3] जो बिस्मिल[4] ख़ाक पर लोटें
तो परियां आके पोंछें, ऐ परी रुख़्सार[5] दामन से

वही ज़ेबा[6] है उस के वास्ते जो क़तअ़[7] है जिस की
निकल सकता है कोई आस्तीं का मार[8] दामन से

अब उनको शश-जहत में[9] हफ़्त-दरिया[10] लोग कहते हैं
गिरे थे अश्क के[11] क़तरे मिरे दो-चार दामन से

कहां है मौसमे-तिफ़्ली[12] कि हम दामन-सवारों में
लिया करते थे कारे - तौसनें - रहवार[13] दामन से

न होवे दिलजलों की 'ज़ौक़' हमसायों से दिलदारी
कि कब फ़ानूस पोंछे शम्अ़ का रुख़्सार दामन से

---

१. उन्माद में २. कांटे ३. मुखमंडल की दीप्ति से ४. घायल ५. गाल ६. उचित, शोभा ७. ढंग ८. सांप ९. चारों ओर १०. सात नदियां ११. आंसुओं के १२. बचपन का ज़माना १३. तेज़ घोड़े का काम

दीवाना आके और भी दिल को बना चले
इक दम तो ठहरो और कि क्या आए क्या चले

ऐ ग़म मुझे तमाम शबे-हिज्र में[1] न खा
रहने दे कुछ कि सुब्ह का भी नाश्ता चले

बल्ल बे[2] गुरूरे-हुस्न ! ज़मीं पर न रक्खे पांव
मानिंदे-आफ़ताब[3] वो बे-नक़्शे-पा[4] चले

क्या ले चले गली से तिरी हम कि जूं नसीम[5]
आए थे सर पे ख़ाक उड़ाने, उड़ा चले

क्या देखता है, हाथ मिरा छोड़ दे तबीब[6]
यां जान ही बदन में नहीं, नब्ज़ क्या चले

ऐ 'ज़ौक़' है ग़ज़ब निगहे-यार अल-हफ़ीज़[7]
वो क्या बचे कि जिस पे ये तीरे-क़ज़ा[8] चले

---

१. वियोग की रात में २. हाय रे ३. सूरज की तरह ४. पद-चिह्न बनाए बिना ५. वायु ६. चिकित्सक ७. खुदा रक्षा करे ८. मृत्यु-रूपी तीर

ज़ख्मे-दिल पर क्यों मिरे मरहम का इस्तेमाल है
मुश्क गर महंगा है तो क्या खून का भी काल है

अब्र[1] बरसों रो चुका पर सोज़े-ग़म से[2] अब तलक
खाक मेरे ढेर की उड़ने में जैसे राल है

जोशे - गिरिया का[3] मिरे तुम कुछ न पूछो माजरा
चादरे - आबे - रवां[4] मुंह पर मिरे रूमाल है

आए वो शायद अयादत को[5] कि बा-रूद-ज़ो'फ़े-हाल[6]
आई मिज़गां पर[7] नज़र भी बहरे-इस्तक़बाल[8] है

रोज़े-महशर से[9] कई दिन देखने को चाहिएं
गो यही ऐ 'ज़ौक़' तूले-नामा-ए-ऐमाल[10] है

---

१. बादल २. दुःख-ताप से ३. रोने के वेग को ४. बहते पानी की चादर (आबे-रवां एक कपड़े का भी नाम है) ५. हाल पूछने को ६. बेहद कमज़ोरी पर भी ७. पलकों पर ८. स्वागतार्थ ९. प्रलय के दिन से १० कर्मों का लम्बा हिसाब

आता नहीं महे-तल्अ़त[1] क्या देर लगाई है
खेंच ऐ कशिशे-उल्फ़त[2] क्या देर लगाई है

आंखों में है दम तिरे बीमारे-मोहब्बत का
दिखला दे कहीं सूरत क्या देर लगाई है

किस फ़िक्र में है साक़ी दे बादा[3] जो है बाक़ी
थोड़ी है यहां फ़ुर्सत क्या देर लगाई है

बे-बादा[4] गुलिस्तां में पीते हैं लहू मैकश[5]
साक़ी ने दमे-इश्रत[6] क्या देर लगाई है

ऐ 'ज़ौक़' शहीद उसको करते हैं कई आशिक़
करनी है अगर सबक़त[7] क्या देर लगाई है

---

१. चन्द्रमुखी २. प्रेमाकर्षण ३. शराब ४. शराब के बिना
५. शराबी ६. ऐश के समय ७. पहल

था क़दे-रा'ना[1] कभी पर अब हवस के बोझ से
झिलमिलाता-सा है शो'ला इक नफ़स के[2] बोझ से

निकले दुनिया से कहां अहमक़ उठाकर बारे-हिर्स[3]
रह गया ये तो गधा दलदल में फंस के बोझ से

मत लगा ऐ इश्क़ दिल के आबले पर नक़्शे-ग़म[4]
टूट जाएगा ये गुंबद इस क़लम के बोझ से

सर झुकाते हैं वो आज़ाद अपना कब मानिंदे-सर्व[5]
है सुबुकसारी[6] जिन्हें बारे-हवस के[7] बोझ से

क्या हुआ दिल ने लिया गर एक कोहे-ग़म[8] उठा
ये नहीं ऐ 'ज़ौक़' दबता ऐसे दस के बोझ से

---

१. सुन्दर (ऊंचा) क़द २. श्वास के ३. लोलुपता का बोझ
४. दुःख का चिह्न ५. सर्व ऐसे सुन्दर और सीधे पेड़ की तरह
६. छुटकारा, लज्जा ७. लोलुपता के बोझ से ८. ग़म का पहाड़

है तिरे कान ज़ुल्फ़े - मुअम्बर[1] लगी हुई
रक्खेगी ये न बाल बराबर लगी हुई

बैठे भरे हुए हैं खुमे-मै की[2] तरह हम
पर क्या करें कि मुहर है मुंह पर लगी हुई

मैयत को[3] गुस्ल दीजो न इस ख़ाकसार की
है तन पे ख़ाके-कूचा-ए-दिलबर लगी हुई

निकले है कब किसी से उस की मिज़ा की[4] नोक
है फांस सी कलेजे के अन्दर लगी हुई

ऐ 'ज़ौक़' देख दुख़्तरे-रिज़ को[5] न मुंह लगा
छुटती नहीं है मुंह से ये काफ़िर लगी हुई

---

१. सुगंधित केश-राशि २. शराब के मटके की तरह ३. लाश को ४. पलकों की ५. अंगूर की बेटी (शराब) को

नासाज़[1] है जो हम से उसी से ये साज़[2] है
क्या ख़ूब दिल है वाह हमें जिस पे नाज़ है

दरवाज़ा मैकदे का[3] न कर बंद मोहतसिब[4]
ज़ालिम ख़ुदा से डर कि दरे-तौबा[5] बाज़ है[6]

ख़ाना - ख़राबियां दिले - बीमारे - ग़म की देख
वो ही दवा ख़राब है जो ख़ाना - साज़[7] है

उस बुत पे गर ख़ुदा भी हो आशिक़ तो रश्क[8] आए
हरचन्द[9] जानता हूं कि वो पाकबाज़[10] है

ऐ 'ज़ौक़' सब पे क्यों न, खुले अपना राज़े-इश्क़
हर नाला[11] इक कुलीदे - दरे - गंजे - नाज़[12] है

१. रुष्ट या शत्रु २. सांठ-गांठ ३. शराबख़ाने का ४. रसाध्यक्ष ५. तोबा-रूपी दरवाज़ा ६. खुला है ७. घर की बनी ८. ईर्ष्या ९. यद्यपि १०. पवित्र ११. चीख़ १२. सौन्दर्य-रूपी ख़ज़ाने के दरवाज़े की कुंजी

गुज़रती है मज़े से ज़िन्दगी ग़फ़लत-शिआरी से[1]
मिरे नज़दीक बेहोशी है बेहतर होशियारी से

कभी गर सर उठा अपना तो जूं अश्के-सरे-मिज़गां[2]
ज़मीं से जा लगा सर झुक के अपना शर्मसारी से

करे है काम तेग़े-यार[3] किस-किस आबदारी से[4]
दिखाती अपनी गुलकारी है क्या-क्या ज़ख़्मकारी से

ज़बां खोलेंगे मुझपर बद-ज़बां क्या बद-शिआरी से[5]
कि मैंने ख़ाक भर दी उनके मुंह में ख़ाकसारी से

नहीं आता न आए रहम ऐ 'ज़ौक़' उस सितमगर को
बला से ख़ुश तो हो जाता है मेरी आहो-ज़ारी से

---

१. अचेतना से २. पलकों पर टिका आंसू ३. प्रियतम की कटार ४. तेजी और चमक से ५. नीचता से

क्या ग़रज़ लाख ख़ुदाई में हों दौलत वाले
उनका बन्दा हूं जो बन्दे हैं मोहब्बत वाले

साक़िया हों न सुबूही को[1] जो आदत वाले
सुब्हे - महशर को[2] भी उट्ठें न तेरे मतवाले

न सितम का कभी शिकवा न करम की ख्वाहिश
देख तो हम भी हैं क्या सब्रो-क़नाअत[3] वाले

दिल से कुछ कहता हूं मैं मुझसे है दिल कुछ कहता
दोनों इक हाल में हैं रंजो - मुसीबत वाले

कभी अफ़सोस है आता, कभी रोना आता
दिले - बीमार के हैं दो ही अयादत[4] वाले

नाज़ है गुल को[5] नज़ाकत पे चमन में ऐ 'ज़ौक़'
उसने देखे ही नहीं नाज़ो - नज़ाकत वाले

---

१. सुबह पी जाने वाली शराब २. प्रलय-दिवस को ३. सन्तोष
४. बीमार-पुरसी ५. फूल को

निगह का वार था दिल पर, फड़कने जान लगी
चली थी बरछी किसी पर, किसी के आन लगी

किसी के दिल का सुनो हाल दिल लगाकर तुम
जो होवे दिल को तुम्हारे भी मेहरबान लगी

उड़ाई हिर्स ने[1] आकर जहां में सबकी ख़ाक
नहीं है किसको हवा ज़ेरे-आस्मान[2] लगी

किसी की काविशे-मिज़गां से[3] आज सारी रात
नहीं पलक से पलक मेरी एक आन[4] लगी

तबाह बह्‌रे-जहां में[5] थी अपनी कश्ती-ए-उम्र[6]
सो टूट-टूट के बारे[7] किनारे आन लगी

ख़दंगे-यार[8] मिरे दिल से किस तरह निकले
कि उसके साथ है ऐ 'ज़ौक़' मेरी जान लगी

---

१. लोभ ने २. आकाश के नीचे (धरती पर) ३. पलकें झपकाने से ४. क्षण ५. संसार-रूपी सागर में ६. आयु-रूपी नाव ७. आख़िर ८. प्रियतम द्वारा चलाया हुआ तीर

हुए क्यों उस पे आशिक़ हम अभी से
लगाया जी को नाहक़ ग़म अभी से

दिला रब्त[1] उससे रखना कम अभी से
जता देते हैं तुझको हम अभी से

तिरे बीमारे-ग़म के हैं जो ग़म-ख़्वार[2]
बरसता उन पे है मातम अभी से

तुम्हारा मुझको पासे-आबरू[3] था
वगर्ना अश्क[4] थम जाते अभी से

मरा जाना मुझे ग़ैरों ने ऐ 'ज़ौक़'
कि फिरते हैं ख़ुशो-ख़ुर्रम[5] अभी से

---

१. सम्बन्ध २. सहानुभूतिकर्ता ३. इज्जत का खयाल ४. आंसू
५. अत्यन्त प्रसन्न

हालत नशे में देखना उस बेहिजाब की[1]
हर नाज़, हर अदा में है मस्ती शराब की

कूचे में आ पड़े थे तिरे ख़ाक हो के हम
यां तो सबा ने[2] और भी मिट्टी ख़राब की

क़ासिद[3], जवाब जान मिरी दे चुकी मुझे
पर मुन्तज़िर है आंखों में ख़त के जवाब की

क़त'आ

निकले हो मैकदे से अभी मुंह छुपा के तुम
दाबे हुए बग़ल में सुराही शराब की

ऐ 'ज़ौक़' बस न आपको सूफ़ी जताइए
मालूम है हक़ीक़ते - हू - हक़[4] जनाब की

---

१. बेपर्दा की २. सुबह की ठंडी और हल्की हवा ३. पत्रवाहक
४. हू-हक़ (सूफ़ियों के नारे की) वास्तविकता

इक सदमा दर्दे-दिल से मेरी जान पर तो है
लेकिन बला से, यार के ज़ानू पे[1] सर तो है

आना है गर्चे उनका क़यामत पे मुन्हसिर[2]
हम खुश हैं ये कि आने की उनकी खबर तो है

ऐ शम्अ! दिल है रोने में जलता तो क्या हुआ
हो जाती इससे रात बला से बसर तो है

तुरबत पे[3] दिलजलों के नहीं गो चिराग़ो - गुल[4]
सीने में सोज़िशे - दिलो - दाग़े - जिगर[5] तो है

वो दिल कि जिसमें सोज़े-मोहब्बत[6] न होवे 'ज़ौक़'
बेहतर है उससे संग[7] कि उसमें शरर[8] तो है

---

१. जांघ पर २. प्रलय पर आधारित (प्रलय-दिवस को ही आएंगे) ३. क़ब्र पर ४. दीपक और फूल ५. दिल की तपन और कलेजे का दाग़ ६. प्रेम की तपन ७. पत्थर ८. चिंगारी

साक़िया ! ईद है, ला बादे से[1] मीना[2] भर के
कि मै-आशाम[3] प्यासे हैं महीना भर के

आशनाओं से[4] अगर ऐसे ही बेज़ार हो तुम
तो डुबो दो उन्हें दरिया में सफ़ीना[5] भर के

खूब उस गुलशने-रुखसार से[6] ले जाते हैं गुल[7]
अपने दामाने-नज़र[8] मर्दमे-बीना[9] भर के

खुमे-पुर-जोश की[10] मानिन्द छलकता है मुदाम[11]
खूने-हसरत से लबों तक मेरा सीना भर के

जामे-ख़ाली[12] भी लगा मुंह से न कमज़र्फ़ के[13] साथ
'ज़ौक़' के साथ, क़दह[14] ज़ौक़ से[15] पीना भर के

---

१. शराब से २. सुराही ३. शराबी ४. प्रेमियों से ५. नाव ६. गालों या कपोलों-रूपी बाग़ से ७. फूल ८. नज़र-रूपी दामन ९. पारखी व्यक्ति १०. शराब के भरे मटके की ११. हमेशा १२. खाली प्याला १३. अपात्र के १४. प्याला १५. मज़े से

याद आया यां के आने का वायदा उन्हें तो कब
जब रात को वो पांव में मेहंदी लगा चुके

आना बला से उसका क़यामत से कम नहीं
मरते हैं इन्तिज़ार में इक रोज़ आ चुके

जब तक कि सर है, साथ ये सर के है, हो-सो-हो
हम अब तो सर पर बारे-मोहब्बत[1] उठा चुके

ज़ह्लाब[2] भी है बादा[3] तो है हमको नोशे-जां[4]
साक़ी प्याला मुंह से हम अब तो लगा चुके

अच्छा किया वफ़ा के इवज़ तूने की जफ़ा
बस अब न कर सितम कि क्या अपना पा चुके

बनकारो आज ख़ूब चलो मैकदे में[5] 'ज़ौक़'
छोड़ो कहीं वज़ीफ़े[6] बहुत बड़-बड़ा चुके

---

१. प्रेम का बोझ २. विष-जल ३. शराब ४. अमृत ५. शराब-खाने में ६. जाप

निगह[1] क्या और मिज़ा[2] क्या, हम तो दोनों को बला समझे
इसे तीरे-क़ज़ा[3], उसको परे-तीरे-क़ज़ा[4] समझे

सितम को हम करम[5] समझे, जफ़ा को हम वफ़ा समझे
और इस पर भी न वो समझे, तो उस बुत को ख़ुदा समझे

न दी रुख़्सत नज़र को मेरी जानिब, क्यों तग़ाफ़ुल से[6]
इसे भी आप क्या मेरा ही बख़्ते-नारसा[7] समझे

हिसाब असला[8] न पूछे मुझसे मेरे दिल के ज़ख़्मों का
हिसाबे-दोस्तां दर-दिल अगर वो दिलरुबा समझे

न आया ख़ाक भी रस्ता समझ में उम्रे-रफ़्ता का[9]
अगर समझे तो दाग़े-मा'सियत को[10] नक़्शे-पा[11] समझे

समझ ही में नहीं आती है कोई बात 'ज़ौक़' उसकी
कोई जाने तो क्या जाने, कोई समझे तो क्या समझे

---

१. नज़र २. पलक ३. मृत्यु का तीर ४. मृत्यु के तीर का पर ५. कृपा ६. उपेक्षा से ७. दुर्भाग्य ८. कदापि ९. गुज़रती आयु १०. पाप के दाग़ को ११. पदचिह्न

दिल कहां सैर - तमाशे पे मिरा लगता है
जी के लग जाने से जी भी बुरा लगता है

जो हवादिस से[1] ज़माने के गिरा फिर न उठा
नख़्ल[2] आंधी का कहीं उखड़ा हुआ लगता है

न शबे - हिज्र में[3] लगती है ज़बां तालू से
और न पहलू मिरा बिस्तर से ज़रा लगता है

आबे - ख़ंजर[4] जो है ज़ह्लाब[5] वफ़ादारी को
पानी शायद कि सरे - मल्के - फ़ना[6] लगता है

ज़र्दं ज़ाहिद[7] है तो क्या खोट अभी है दिल में
'ज़ौक़' इस ज़र को[8] कसौटी पे कसा लगता है

१. दुर्घटनाओं से २. पेड़ ३. विरह की रात में ४. खंजर की तेज़ धार ५. विष-जल ६. मृत्यु के फ़रिश्ते (यमदूत) की इच्छा ७. विरक्त, पारसा ८. सोने को

परी-रू[1], क्या सितमगर पेशतर[2] ऐसे न होते थे
वलेकिन जैसे तुम हो फ़ित्नागर[3] ऐसे न होते थे

सफ़र है अब की जां का हज़रते - दिल बैठे हैरां हैं
परेशां वर्ना यूं गिर्दे - सफ़र ऐसे न होते थे

हमारे आबलों में[4] आब[5] है या आबदारी[6] है
कि पहले खारे-सहरा[7] तेज़तर ऐसे न होते थे

सितम दुनिया के जो-जो थे सितमगर! दिल पे गुज़रे थे
मगर सदमे हमारी जान पर ऐसे न होते थे

हमारे शे'र सुनकर 'ज़ौक़' जैसे बज़्मे - आलम में[8]
हुए क़ायल हैं अब अहले - नज़र[9] ऐसे न होते थे

---

१. परी जैसे सुन्दर मुखड़े वाला २. इससे पहले ३. झगड़े खड़े करने वाला ४. पांव के छालों में ५. पानी ६. चमक ७. मरुस्थल के कांटे ८. संसार में ९. मर्मज्ञ, पारखी

हाथ उठाओ इश्क़ के बीमार से
कोई बचता भी है इस आज़ार से[1]

यूं निगह[2] निकले है चश्मे-यार से[3]
मस्त जैसे ख़ाना-ए-ख़ुम्मार से[4]

बेनसीब उसके हैं गर दीदार से[5]
सी दो आंखों को नज़र के तार से

करता है दस्ते-जुनूं[6] जब कशमकश
जी उलझता है नफ़स के[7] तार से

उठ चुका वो नातुवां[8] जो रह गया
दब के तेरे साया-ए-दीवार से[9]

अपने दामन को बचाकर जाइयो
बर्क़[10] मेरी वादी-ए-पुर-ख़ार से[11]

दिल को हरदम आलमे-मानी से[12] 'ज़ौक़'
है ख़बर आती नफ़स के तार से

---

१. रोग से २. नज़र ३. प्रेयसी की आंख से ४. शराबख़ाने से ५. दर्शन से ६. उन्माद-रूपी हाथ ७. श्वास के ८. निर्बल ९. दीवार की छाया से १०. बिजली ११. कांटों-भरी वादी से १२. आध्यात्मिक संसार से

ख़त बढ़ा, काकुल[2] बढ़े, ज़ुल्फ़ें बढ़ीं, गेसू[3] बढ़े
हुस्न की सरकार में जितने बढ़े, हिन्दू[4] बढ़े

बाद रंजिश के, गले मिलते हुए रुकता है जी
अब मुनासिब है यही कुछ मैं बढ़ूं कुछ तू बढ़े

वाह साक़ी क्या ही दी है दारू-ए-फ़रहत-फ़ज़ा[5]
जिसके इक क़तरे से सेरों जिस्म में लोहू बढ़े

चर्ख़ पर[6] नूरे-क़मर[7] रातों बढ़े, रातों घटे
हुस्न तेरा रोज़-बर-रोज़ ऐ हिलाल-अबरू[8] बढ़े

चाहता है दिल बढ़े उल्फ़त[9] की उनसे रस्मो-राह
पर वहां क़ाबू नहीं किस तरह बेक़ाबू बढ़े

पेशवाई को[10] ग़मे-जानां को[11] चश्मो-दिल से[12] 'ज़ौक़'
जब बढ़े नाले[13] तो उनसे पेशतर[14] आंसू बढ़े

---

१. युवावस्था में चेहरे पर उगने वाले नये बाल २-३. केश ४. काले ५. आनन्ददायिनी मदिरा ६. आकाश पर ७. चांद का प्रकाश ८. नये चांद ऐसी भवों वाले (प्रियतम) ९. सम्बन्ध १०. स्वागत को ११. प्रेयसी के (बिछोह के) ग़म की १२. आंखों और दिल से १३. आर्तनाद १४. पूर्व

जो कुछ कि है दुनिया में, वो इन्सां के लिए है
आरास्ता[1] ये घर उसी मेहमां के लिए है

अपनों से न मिल, अपने हैं सब अपनों के दुश्मन
हर नै में[2], भरी आग नेस्तां के[3] लिए है

कुछ बख्त से[4] मेरे जो सवा है वो सियाही
बाक़ी है तो मेरी शबे - हिज्रां के[5] लिए है

है बादाकशों के[6] लिए इक ग़ैब से ताइद[7]
ज़ाहिद[8] जो दुआ मांगता बारां के[9] लिए है

निकले कोई क्या क़ैदे - इलायक़ से[10] कि ऐ 'ज़ौक़'
दर ही नहीं इस ख़ाना - ए - ज़िन्दां के[11] लिए है

---

१. सजा हुआ २. बांसुरी में ३. जंगल के ४. भाग्य से ५. विरह की रात के ६. शराबियों के ७. ईश्वर की ओर से समर्थन ८. विरक्त, पारसा ९. वर्षों के १०. सम्बन्धों की क़ैद से ११. बन्दीघर के

सबको दुनिया की हवसे-ख्वार[1] लिए फिरती है
कौन फिरता है, ये मुरदार लिए फिरती है

घर से बाहर न निकलता कभी अपने खुर्शीद[2]
हवसे-गर्मी-ए-बाज़ार[3] लिए फिरती है

कर दिया क्या तिरे अबरू ने[4] इशारा क़ातिल
कि क़ज़ा हाथ में तलवार लिए फिरती है

जा के इक बार न फिरना था जहां, वां मुझको
बेक़रारी है कि सौ बार लिए फिरती है

○

खुल गया मज़मूं शिकस्ते-दिल का[5] बिन खत के पढ़े
नामाबर[6] का इस क़दर अपने शिकस्ता हाल है

---

१. भटकने की तृष्णा २. सूरज ३. संसार की रौनक़ की तृष्णा ४. भृकुटि, भौं ५. टूटे दिल का ६. पत्रवाहक

चलता हूं 'ज़ौक़' क़ैद से हस्ती की छूट के
ये क़ैद मार डालेगी दम घूट - घूट के

ढाला जो तुझको हुस्न के सांचे में ऐ सनम
आंखों की जाए[1], भर दिए मोती से कूट के

क्योंकर हुबाब[2] हो सके दरिया से बेकरां[3]
दरिया से जब तलक न मिले टूट - फूट के

उस शम्अ-रू से[4] रात को रुख़सत हुए तो 'ज़ौक़'
रोए हैं दिल के आबले क्या फूट - फूट के

○

सर तो है तन पर मिरे तेग़े - सितम के[5] वास्ते
पर, लगा रक्खा है वो झूटी क़सम के वास्ते

१. जगह २. पानी का बुलबुला ३. अथाह ४. दीपक ऐसे दीप्तिमान मुखड़े वाले से ५. अत्याचार-रूपी तलवार के

८८७

कल जहां से कि उठा लाए थे अहबाब[1] मुझे
ले चला आज वहीं फिर दिले-बेताब मुझे

मैं वो मजनूं हूं कि मजनूं भी हमेशा खत में
क़िब्ला-ओ-का'बा[2] लिखा करता था अलक़ाब[3] मुझे

कुंजे-तन्हाई में[4] देता हूं दिलासे क्या-क्या
दिले-बेताब को मैं, दिले-बेताब मुझे

हो गया जल्वा-ए-अंजुम[5] मिरी आंखों में नमक
क्योंकि[6] आए शबे-हिज्रां में[7] कहो ख़्वाब[8] मुझे

○

बिन जले शम्अ् के, परवाना नहीं जल सकता
क्या बढ़े इश्क़ अगर हुस्न ही सबक़त[9] न करे

१. मित्र २. सम्मानसूचक शब्द ३. उपाधि ४. एकाकी कुंज में ५. सितारों की ज्योति ६. क्योंकर, कैसे ७. विरह की रात में ८. नींद ९. पहल

दिल को सरे-बाज़ार-जहां[1] कर न उचाट
जिस तरह बने, सूदो-ज़ियां में[2] काट
ऐ 'ज़ौक़' फ़लक के[3] जब हैं बारह हिस्से
सौदा न हो क्यों ज़ेरे-फ़लक[4] बारह बाट

○

ऐ 'ज़ौक़' कभी तू न ख़ुश-औक़ात[5] हुआ
इक दम न तिरा सर्फ़े-मुनाजात[6] हुआ
जब तक था जवां, था जवाने-बद-मस्त
अब पीर हुआ तो पीरे-ख़राबात[8] हुआ

○

क्या फ़ायदा फ़िक्रे-बेशो-कम से[9] होगा
हम क्या हैं जो कोई काम हमसे होगा
जो कुछ कि हुआ, हुआ करम से[10] तेरे
जो कुछ होगा तेरे करम से होगा

○

---

१. संसार-रूपी बाज़ार में २. हानि-लाभ में ३. आकाश के ४. आकाश के नीचे ५. अच्छा समय गुज़ारने वाला ६. प्रार्थना में लगा ७. बूढ़ा ८. शराबख़ाने को बुरा कहने वाला वयोवृद्ध ९. कम या अधिक की चिन्ता से १०. कृपा से

आंख उसकी नशे में जब गुलाबी हो जाए
सूफ़ी उसे देखे तो शराबी हो जाए
दिखलाए जो वो रू-ए-कि़ताबी[1] ऐ 'ज़ौक़'
सब मदरिसा काफ़िरे-किताबी हो जाए

○

इन आंखों से रू-ए-लाला-गूं[2] भी देखा
फिर उनको पुर-अज़्[3] अश्के-खूं[4] भी देखा
क्या-क्या देखे न रंग हमने ऐ 'ज़ौक़'
यूं भी देखा जहां में, वूं भी देखा

○

दुनिया के अलम[5] 'ज़ौक़' उठा जाएंगे
हम क्या कहें क्या आए थे क्या जाएंगे
जब आए थे रोते हुए आप आए थे
जब जाएंगे औरों को रुला जाएंगे

○

इस जिहल का[6] है 'ज़ौक़'! ठिकाना कुछ भी
हम पढ़ के हुए इल्म, न दाना[7] कुछ भी
हम जानते थे, इल्म से कुछ जानेंगे
जाना तो ये जाना कि न जाना कुछ भी

○

---

१. किताबी चेहरा २. गुलाबी चेहरा ३. भरा हुआ ४. खून के आंसुओं से ५. दुःख ६. मूर्खता, अज्ञानता का ७. बुद्धिमान

जब तक थे गिरह में अहमक़ों के पैसे
सब कहते थे उनको आप ऐसे - ऐसे
मुफ़्लिस जो हुए तो फिर किसी ने ऐ 'ज़ौक़'
पूछा न कि थे कौन वो ऐसे - तैसे

○

जिन दांतों से हंसते थे हमेशा खिल-खिल
अब दर्द से हैं वही रुलाते हिल - हिल
पीरी में[1] कहां अब वो जवानी के मज़े
ऐ 'ज़ौक़' बुढ़ापे से है दांता किल - किल

○

१. बुढ़ापे में